सर्वहारा दृष्टिकोण

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) का मुखपत्र (पाक्षिक)

वर्ष-34 अंक-7 7 से 21 अप्रैल, 2019 मुख्य संपादक कॉमरेड प्रभास घोष कुल पृष्ठ 8 मूल्य : 2 रुपये

लोकसभा चुनाव की पृष्ठभूमि में

देश की आर्थिक-राजनैतिक-सामाजिक-सांस्कृतिक स्थिति पर एक नजर

देश में 17वीं लोकसभा के चुनाव का बिगुल बज चुका है। इन चुनावों के साथ आंध्र प्रदेश, ओडिशा, अरुणाचल प्रदेश और सिक्किम में विधानसभा के चुनाव भी होंगे। अभी तक केन्द्र व राज्यों में सत्ता में बैठी पार्टियां जोर-शोर से सरकारी धन से अपना महिमा मण्डन करने में जुटी हुई हैं। वे जनता से टैक्स के रूप में जुटाये गये पैसे को अपनी रैलियों व प्रचार में पानी की तरह बहा रही हैं। अखबारों व मीडिया चैनलों को रोज करोड़ों रुपये के विज्ञापन मिल रहे हैं। विज्ञापनों की इस चकाचौंध में लोगों को यह समझ ही नहीं आ रहा है कि सच क्या है और झूठ क्या है। कुछ मीडिया चैनलों ने हिसाब लगाकर बताया है अभी तक प्रधानमंत्री व केन्द्रीय मंत्रियों द्वारा लगभग 100 लाख करोड़ रुपये की नयी घोषणाएं की जा चुकी हैं। इनका एक ही मकसद है जैसे भी हो वोटरों को लुभाना, गुमराह करना। भारत-पाकिस्तान के बीच तनाव व युद्ध जैसा वातावरण एक अलग तरह का अंधराष्ट्रवाद पैदा कर रहा है। एक ऐसा माहौल बनाने की कोशिश की जा रही है कि आम लोग पिछले 5 वर्षों के काम का हिसाब न मांगें। वे यह न पूछें कि 5 वर्षों में सरकार ने क्या किया। महंगाई, बेरोजगारी और गरीबी की पीड़ा झेल रहे लोग, शिक्षा व इलाज से महरूम लोग यह न पूछें कि आपके राज में भी हमारे कष्ट कम क्यों नहीं हुए। किसान-मजदूर यह न पूछें कि आपने हमारे लिए जो वायदे किये थे, उनका क्या हुआ? 'अच्छे दिन' कहां गये? दरअसल उनके तमाम वायदे झूठे झांसे और ''जुमले'' साबित हुए।

रोजगार : 2014 में लोकसभा चुनाव के दौरान भाजपा व उसके प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार नरेन्द्र मोदीजी ने देश के लोगों से वादा किया था कि यदि उनकी सरकार बनती है, तो वे हर वर्ष 2 करोड़ नौजवानों को रोजगार देंगे। जानेमाने उद्योगपति अजीम प्रेमजी के विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ लिबरल स्टडीज ने बेरोजगारी पर एक रिपोर्ट तैयार की है। देश में रोजगार की स्थिति पर 'स्टेट ऑफ वर्किंग इंडिया–2018' की इस रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत के युवाओं में बेरोजगारी की दर 16% तक पहुंच गयी है, जो कि पिछले 20 वर्षों में सबसे ज्यादा है। इससे पता चलता है कि देश में रोजगारी कितना भयावह रूप ले चुकी है। इसका भयावह रूप आज हम देश में हर जगह पर देखते हैं। इस बीच 'स्किल इंडिया' नारा उछाला गया। मानो इसी कमी के कारण अभी तक युवाओं को रोजगार नही मिल रहे थे। 'मेक इन इंडिया', 'डिजिटल इण्डिया' 'मुद्रा' और 'स्टार्ट अप' योजनाओं का जोर-शोर से प्रचार किया गया। इनके विज्ञापनों पर भी भारी भरकम खर्च किया गया। ऐसा दिखाने व जताने का प्रयास किया गया, जैसे कि मरणासन्न पूंजीवादी व्यवस्था अब जीवित हो उठेगी? बेरोजगारी से दुखी-परेशान युवाओं को ऐसा जताया गया कि जैसे बस अब अच्छे दिन आने ही वाले हैं। मगर इन योजनाओं से न तो देश की अर्थव्यस्था में कोई सुधार आया और न ही बेरोजगारों को रोजगार मिला। ऊपर से देश पर नोटबंदी थोप कर रोजगारों व अर्थव्यवस्था की हालत और खराब कर डाली। हर मोर्चे पर नोटबंदी विफल रही। सेंटर फाट मॉनिटरिंग दि इण्डियन इकोनामी (सीएमआईई) की रिपोर्ट कहती है कि नोटबंदी से रोजगारों में भारी कमी आयी है। इससे 2018 में लगभग 1 करोड़ 10 लाख लोगों के रोजगार चले गये। भारतीय संसद की वित्त पर स्थाई समिति ने नोटबंदी से सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) पर जो रिपोर्ट जारी की है, उसमें कहा गया है कि नोटबंदी से जीडीपी में कम से कम एक प्रतिशत की गिरावट आयी है और अंसगठित क्षेत्र में बेरोजगारी बढ़ी है। छोट व मझोले उद्योगों पर भारी चोट पड़ी है।

महंगाई, गरीबी व भुखमरी बढ़ी

बीजेपी राज में तेजी से बढ़ी मंहगाई से लोगों का दम फूल गया है। कांग्रेस के शासन में भी लोग महंगाई से त्रस्त थे। एक तो मंहगाई की मार, ऊपर से रुपये की कीमत में लगातार कमी ने मिलकर लोगों का बजट बिगाड़ दिया है। दाल, रोटी, सब्जी, रसोई गैस, खाद-बीज, बिजली-पानी, डीजल, पैट्रोल–सब कुछ मंहगा हुआ है। अगर कुछ सस्ता हुआ है, तो वह है लोगों के पसीने की कीमत। मोदी सरकार ने 1 जून 2014 से 7 नवम्बर 2018 के बीच रसोई गैस सिलेंडर के दाम में 93.42 रुपये की भारी बढ़ोतरी की। मोदी सरकार ने तय किया कि इसके दाम में हर महीने कम से कम 4 रुपये की वृद्धि की जायेगी और जल्द ही इसकी सब्सिडी भी खत्म कर दी जायेगी। इसकी समय सीमा मार्च 2018 रखी गयी थी, मगर चुनावी साल की वजह से इसे आगे बढ़ा दिया गया है। जनवरी 2014 से जनवरी 2016

(शेष पृष्ठ 2 पर)

कोलकाता में कॉमरेड लुकोस की स्मृति सभा आयोजित

25 फरवरी को खराब मौसम का डट कर सामना करते हुए बंगाल के दूर-दूर के कोने से और भारत के कुछ राज्यों से भी आए कई हजार कैडर, समर्थक, हमदर्द और नेता पश्चिम बंगाल में हावड़ा स्थित शरत सदन के विशाल सभागार के सामने खड़े थे एसयूसीआई (सी) के पोलिट ब्यूरो सदस्य और केरल के पूर्व राज्य सचिव कॉमरेड सीके लुकोस को याद करते हुए, जिनका लंबी बीमारी के बाद 13 फरवरी को तिरुवनंतपुरम में 71 वर्ष की आयु में निधन हो गया था, सभी साथी गहरे शोक में थे, वे अपने सीने पर काला बैज पहने हुए थे। पार्टी की केंद्रीय कमेटी के तत्वावधान में स्मृति सभा आयोजित की गई। सबसे पहले सभागार के सामने मुख्य हॉल के मुख्य प्रवेश द्वार के बाहर विभिन्न पार्टी निकायों और राज्य के विभिन्न संगठनों और जन संगठनों की ओर से दिवंगत नेता को श्रद्धांजलि अर्पित की गई, जहां फूलों से सजी उनकी तस्वीर लगी हुई थी। उसके बाद सभी साथी सभागार के भीतर चले गए। पार्टी के संस्थापक, नेता, शिक्षक व पथप्रदर्शक कॉमरेड शिवदास घोष पर रचित गीत पेश करने के साथ स्मृति सभा शुरू हुई। पार्टी के पोलिट ब्यूरो सदस्य और सभाध्यक्ष कॉमरेड के. राधाकृष्ण ने दिवंगत नेता को श्रद्धांजलि दी। फिर पार्टी के महासचिव कॉमरेड प्रभास घोष, बासद (मार्क्सवादी) के महासचिव कॉ. मुबीनुल हैदर चौधरी और पोलिट ब्यूरो व केंद्रीय कमेटी के अन्य सदस्यों ने कॉ. लुकोस के चित्र पर माल्यार्पण किया। झारखंड, मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु के राज्य सचिवों क्रमशः कॉ. रॉबिन समाजपति, कॉ. प्रताप सामल, कॉ. बी एस अमरनाथ और कॉ. सी एच मुराहरी और ओडिशा राज्य कमेटी के सदस्य कॉ. बिशन दास द्वारा भी पुष्पांजलि अर्पित की गई।

इसके बाद, पार्टी की केंद्रीय कमेटी के सदस्य और वर्तमान केरल राज्य सचिव कॉमरेड वी वेणुगोपाल ने कॉमरेड लुकोस की स्मृति में एक मार्मिक भाषण दिया। उन्होंने दिखाया कि कॉमरेड शिवदास घोष चिंतन पर आधारित एक कठिन- कठोर संघर्ष और जीवन के तमाम पहलुओं को समेटे हुए जीवन संघर्ष के रास्ते कॉमरेड लुकोस कैसे एक आदर्श क्रांतिकारी चरित्र के रूप में उभरे, केरल में पार्टी संगठन की स्थापना की जहां पार्टी 1960 के दशक में भी अज्ञात थी और क्रांतिकारी जिम्मेदारियों को निभाने में सक्षम कई पार्टी नेताओं और कैडरों को विकसित किया।

अपने अध्यक्षीय भाषण में कॉ. के. राधाकृष्ण ने कॉ. लुकोस के साथ दशकों तक अपने करीबी संबंध को याद किया और कैसे कॉ. लुकोस ने अपनी अंतिम सांस तक अपनी गंभीर बीमारी की परवाह न करते हुए, जिस बीमारी ने उनकी चलने-फिरने, यहां तक कि बोलने की क्षमता भी हर ली थी, केरल राज्य संगठन का संचालन किया, केंद्रीय कमेटी की ओर से तमिलनाडु राज्य संगठन के कामकाज को देखा व एक राष्ट्रीय नेता के रूप में अपनी जिम्मेदारी निभाई।

हावड़ा : सभा को संबोधित करते हुए एसयूसीआई (सी) के महासचिव कॉ. प्रभास घोष और मंच पर बैठे हुए बासद (मार्क्सवादी) के महासचिव कॉ. मुबीनुल हैदर चौधरी और एसयूसीआई (सी) के केंद्रीय कमेटी व पोलिट ब्यूरो सदस्य

अंत में, कॉमरेड प्रभास घोष ने दिवंगत नेता को श्रद्धांजलि देते हुए दिखाया कि कैसे कॉमरेड शिवदास घोष के एक उत्साही छात्र के रूप में कॉमरेड लुकोस ने एक वास्तविक क्रांतिकारी चरित्र के इतने उच्च स्तर को हासिल किया और पार्टी को केरल में ही नहीं बल्कि साथ ही दक्षिण भारत के अन्य हिस्सों में भी मजबूती से स्थापित किया।

अंतर्राष्ट्रीय गान के साथ सभा का समापन हुआ।

लोकसभा चुनाव ...

(पृष्ठ 1 का शेष)

तक मोदी सरकार ने पेट्रोलियम पदार्थों पर उत्पाद शुल्क में नौ बार इजाफा कर जनता की गाढ़ी कमाई से सरकारी खजाना भरा। उत्पाद शुल्क दुगुना कर दिया। इस तरह तीन वर्षों में सरकार ने करीब 1.5 लाख करोड़ रुपये का भारी भरकम राजस्व लोगों पर टैक्स बढ़ाकर वसूला। साथ ही 50 हजार करोड़ रुपये पेट्रोलियम सब्सिडी कटौती कर लोगों पर दोतरफा बोझ डाला। एक साल में सरकारी तेल कम्पनियों ने 68 हजार करोड़ रुपये से अधिक का मुनाफा कमाया। निजी कम्पनियों ने भी लगभग 30-35 हजार करोड़ रुपये की कमाई की। यह मुनाफा लोगों की जेब खाली करके निकाला गया। इससे यह साफ है कि मोदी राज में कम्पनियों के 'अच्छे दिन' आये हैं जबकि मंहगाई, टैक्सों में बढ़ोतरी व अनुदानों में कटौती का बोझ बढ़ने से आम लोगों की आर्थिक हालत खराब हुई है।

जनता खाद्य सुरक्षा से महरूम

मोदी सरकार दावा करती रही है कि उसका एक ही एजेंडा है 'विकास'। उसका दावा है कि भारत दुनिया का छठा सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश बन गया है और हमारी आर्थिक वृद्धि दर दुनिया में सबसे ज्यादा है। फिर भी हमारे देश में लगातार भुखमरी क्यों बढ़ रही है? ग्लोबल हंगर इंडेक्स (जीएचआई) के अनुसार वर्ष 2018 में हमारा देश 119 देशों में 103वें स्थान पर आ गया। भुखमरी के मामले में हमारा देश दुनिया के सबसे बुरे हालातों वाले देशों में शुमार है। नेपाल, म्यांमार, श्रीलंका, बांग्लादेश तथा अफ्रीकी देशों से भी हम बहुत नीचे हैं। 2014 में जब मोदीजी ने गद्दी संभाली थी, तब हमारे देश का स्थान 55वां था। यानी हमारे देश में भुखमरी बढ़ रही है। इस रिपोर्ट के मुताबिक भारत दुनिया के उन 45 देशों में शामिल है, जहां भुखमरी की स्थिति अत्यन्त भयावह है। जाहिर है कि यह भुखमरी मौजूदा पूंजीवादी व्यवस्था की देन है जो शोषण पर आधारित व्यवस्था है। यह शोषक व शोषित दो वर्गों में बंटी हुई समाज व्यवस्था है। एक तरफ करोड़ों शोषित-पीड़ित मेहनतकश हैं, जो कड़ी मेहनत करते हैं; लेकिन वे दिनोदिन गरीब से गरीब होते जा रहे हैं। दूसरी तरफ चंद शोषक हैं, पूंजीपति हैं, जो शोषण के जरिये दिनोदिन धनकुबेर बनते जा रहे हैं। कांग्रेस हो या भाजपा–इन्हीं धनकुबेर पूंजीपतियों के लिए सरकार चला रही हैं।

मोदी सरकार ने छीना गरीबों का निवाला

पूंजीवादी व्यवस्था में गरीबी का निदान संभव नहीं है। मगर जनकल्याणकारी मुखौटे से वह अपने इस कुरूप चेहरे को ढकने का यत्न करती है। लोगों को सांत्वना देने के लिए कुछ कदम उठाये जाते रहे हैं। निस्सन्देह इनके लिए भी लोगों को संघर्ष करना पड़ा है और यह संघर्ष जारी है। आन्दोलन के दबाव में राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा कानून-2013 के तहत गरीबों को भोजन के लिए जो थोड़ी-बहुत सामाजिक सुरक्षा दी गई थी, भाजपा-नीत मोदी सरकार ने उसे भी कमजोर कर दिया। इसमें हर परिवार को सस्ती दर पर कम से कम 35 किलो अनाज देने के बदले हरेक व्यक्ति को अभी मात्र 25 किलो अनाज दिया जा रहा है, जो कि किसी व्यक्ति की जरूरत से कम है। यह व्यवस्था भी सभी जरूरतमंदों के लिए नहीं है। इसमें संख्या को सीमित रखा गया है। मार्च 2015 में मोदी सरकार ने एक परिपत्र जारी किया, जिसमें कहा गया कि किसी नये अंत्योदय परिवार की पहचान नहीं की जायेगी और अंत्योदय परिवारों की कुल संख्या में कमी की जायेगी। साफ जाहिर है कि यह गरीबों को सस्ता राशन देने से मुकरना है। केन्द्रीय खाद्य आपूर्ति मंत्री व सरकार के अनुसार राशन कार्डों में कटौती से ही सरकार को 17500 करोड़ रुपये की बचत हुई है। यह बचत लोगों की जान की कीमत पर की गई है।

अन्नदाता किसान खुद भुखमरी का शिकार

मोदी राज के तीन वर्षों 2014 से 2016 में कर्ज जैसे कारणों से 36 हजार किसानों व खेत मजदूरों ने आत्महत्या की है। मोदीजी कह रहे हैं कि वे 2022 तक किसानों की आमदनी दुगुनी कर देंगे। उनकी आमदनी दुगुनी हो न हो, कर्ज और कंगाली जरूर दुगुनी हो गई। अर्थशास्त्रियों का कहना है कि आमदनी दुगुनी करने के लिए कृषि वृद्धि दर 5 वर्षों तक 14.86% से अधिक रहनी चाहिए। नीति आयोग कहता है 10.4% की वृद्धि दर चाहिए। जबकि मोदी सरकार के शासनकाल में कृषि वृद्धि दर में गिरावट आयी है। इसे मोदी सरकार की कृषि नीति का ही परिणाम कहा जायेगा कि 2013-14 में जो कृषि वृद्धि दर 5.6% प्रतिशत थी, 2017-2018 में 2.1 प्रतिशत हो गयी है। मतलब साफ है कि सरकार किसान-विरोधी और कृषि-विरोधी नीति अपना रही है।

फसलों के लाभकारी दाम देने से मुकरी बीजेपी सरकार

नरेन्द्र मोदी सरकार ने स्वामीनाथन आयोग की सिफारिशों के अनुसार, कृषि फसलों की लागत पर 50% लाभ देने की बात कही थी। मगर 20 फरवरी 2015 को सुप्रीम कोर्ट में हलफनामा देकर मोदी सरकार ने कहा है कि कृषि लागत खर्च पर 50% लाभ देने के स्तर तक न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) को बढ़ाना उनके लिए संभव नहीं हैं। सरकार का कहना है कि उद्योगपति को सस्ते कृषि उत्पाद मिलें, अंतर्राष्ट्रीय बाजार में आयात-निर्यात प्रतिस्पर्द्धा बनी रहे और विश्व व्यापार संगठन की शर्तों का पालन किया जा सके, इसलिए कृषि उपजों की लागत से डेढ़ गुना कीमत स्वामीनाथन आयोग की सिफारिश के अनुसार सरकार नहीं दे सकती। मतलब साफ है कि देशी एकाधिकार कम्पनियों को लाभ देने के लिए किसानों का शोषण किया जा रहा है।

फसल बीमा योजना की लूट

जनवरी 2016 में प्रधानमंत्री मोदी द्वारा पुरानी फसल बीमा योजनाओं में बदलाव कर, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना चालू की गई। कहा गया कि इससे किसानों को बहुत लाभ होगा। 2016-17 में बीमा कंपनियों को मिले कुल प्रीमियम 22,189. 62 करोड़ रुपये में से किसानों को मुआवजे का भुगतान के 4,327.40 करोड़ रुपये किया गया। (फाइनेन्सियल एक्सप्रैस, 14 मई 2018)) खबर है कि पिछले दो वित्त वर्ष में कृषि बीमा कंपनियों ने किसानों से 53955 करोड़ रुपये का प्रीमियम इकट्ठा किया और मुआवजे का भुगतान 34727 करोड़ रुपये किया। इस तरह बीमा कम्पनियों को 19,228 करोड़ रुपये का फायदा हुआ। अत: फसल बीमा योजना में शामिल 18 बीमा कम्पनियों को गरीब किसानों की मेहनत की कमाई हड़पकर फलने-फूलने का अवसर दिया। 'अच्छे दिन', किसानों के लिए नहीं, बल्कि बीमा कम्पनियों के आए। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना प्राइवेट कंपनियों के लिए वरदान और किसानों के लिए आफत साबित हुई।

महिलाओं व बच्चियों पर बढ़े अपराध

बढ़ती अश्लीलता व नशाखोरी ने युवा वर्ग को अपराध की दुनिया में धकेल दिया। महिलाओं व मासूम बच्चियों के खिलाफ रोंगटे खड़े कर देनेवाले अपराध हुए हैं। नेशनल क्राइम रिकार्ड ब्यूरो के आंकड़े बताते हैं कि हर दिन बलात्कार की 107 घटनाएं होती हैं। लगभग 1000 महिलाएं हर दिन किसी न किसी प्रकार के अपराध का शिकार होती हैं। लगभग 300 मासूम बच्चे हर दिन मानव देह-व्यापार, बंधुआ मजदूरी, यौन शोषण व बाल विवाह जैसे कुकृत्यों के शिकार होते हैं। भाजपा की मोदी सरकार के शासन की ही यदि बात करें, तो 2014 में लगभग 89 हजार बच्चों के साथ अपराध दर्ज हुए थे। यह संख्या 2016 में बढ़कर 1 लाख को पार कर गयी। लगभग 55000 बच्चों का अपहरण हुआ। इस प्रकार के अपराधों में लगभग 30% की वृद्धि हुई है। लोग बेहद कष्ट से कहते हैं कि हमारा देश बच्चों व महिलाओं के रहने योग्य नहीं रह गया है। इस बारे मे कोई भी सरकार गंभीर नहीं है।

सामाजिक-सांस्कृतिक संकट बढ़ा

देश की असहनीय आर्थिक-राजनैतिक परिस्थिति का प्रतिबिम्बन देश के सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन में भी देखा जा रहा है। यह बेहद दुखद है कि सामाजिक-सांस्कृतिक गिरावट के चलते लोग आज ईमानदारी, लगनशीलता व सच बोलने के महान गुणों को खो रहे हैं। वे समाज, देश तथा जनता के प्रति उदासीन होते जा रहे हैं। उनमें कर्तव्यबोध खत्म हो रहा है। नैतिक मान इतना नीचे जा रहा है कि होश-हवास खोकर स्वार्थी जानवर में तब्दील हो रहे हैं। जिस किसी भी तरीके से हो, पैसे कमाना ही लोगों एकमात्र ध्येय बन रहा है। पूंजीवाद शासित हमारे देश के सामाजिक जीवन में तेजी से उभरती तस्वीर यही है। देश के सांस्कृतिक जीवन की यह मार्मिक स्थिति क्यों पैदा हुई, हर चिंतनशील व्यक्ति को यह सवाल बेचैन कर रहा है। इसका उत्तर साफ है, शासक पूंजीपति वर्ग लोगों की ईमानदारी, लगनशीलता, सोचने-समझने की क्षमता तथा रुचि-संस्कृति को ध्वस्त करने में लिप्त है। रुचि-संस्कृति पर शासक पूंजीपति वर्ग के इस सुनियोजित हमले के निहितार्थ को दिखाते हुए हमारे प्रिय नेता, शिक्षक व इस युग के विशिष्ट मार्क्सवादी चिंतक कॉ. शिवदास घोष ने बहुत पहले ही कहा था कोई राष्ट्र भूखा रहकर भी उठ खड़ा हो सकता है, भूखी-नंगी रहकर भी जनता क्रांति कर सकती है, यदि वह उच्च नीति-नैतिकता व विचारधारा से लैस हो। उसका नैतिक बल अटूट हो। निस्संदेह क्रांति के डर से भयभीत पूंजीपति वर्ग आज लोगों की बची-खुची इंसानियत को भी खत्म करने के लिए जी-तोड़ कोशिश कर रहा है। छात्र-छात्राओं, युवक-युवतियों व आम लोगों में मादक पदार्थों की लत डालकर उन्हें यौनता और हिंसा के अमानवीय कुकृत्यों की ओर धकेला जा रहा है।

मोदी राज में भी फला-फूला भ्रष्टाचार

2014 में अपने चुनावी भाषणों में नरेन्द्र मोदीजी यह कहते नहीं थकते थे कि न खाऊंगा, न खाने दूंगा। उन्होंने खुद को सरकारी खजाने का चौकीदार बताया। उन्होंने कहा कि वे सरकारी धन को लुटने नहीं देंगे। वे विदेशों में जमा काले धन को 100 दिनों के भीतर देश में लाकर उससे गरीबों के खातों में 15-15 लाख रुपये जमा करायेंगे। 5 साल बीत गये। इनमें से किसी भी बात को वे अमली जामा नहीं पहना सके। बात ऐसी नहीं है कि उन्होंने कोशिश की मगर कामयाब नहीं हुए, बल्कि बात यह है कि भ्रष्टाचार व काले धन से लड़ने की बजाय उनके प्रयासों से यह सामने आया कि वे भ्रष्टाचारियों व काला धन रखनेवालों को ही पनाह दे रहे हैं।

काला धन : सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर सरकार को 627 ऐसे नामों की सूची बंद लिफाफे मे सौंपी गयी थी, जिन्होंने विदेशों में काला धन जमा कर रखा था। उसी समय इण्डियन एक्सप्रेस अखबार ने भी ऐसे 1195 भारतीयों के नामों की सूची उजागर की थी, जिन्होंने एसबीसी की स्विस शाखा में काला धन जमा कर रखा था। अप्रैल 2016 मे काला धन व भ्रष्टाचार उजागर करने वाले पनामा पेपर्स में भी हमारे देश के लगभग 500 लोगों के नाम सामने आये थे। विदित रहे पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री नवाज़ शरीफ का नाम भी पनामा पेपर में आया था जिस पर पाकिस्तान की सुप्रीम कोर्ट ने छान-बीन की और उन्हें दोषी पाया। इसी मामले में उन्हें प्रधानमंत्री का पद गंवाना पड़ा। हमारे देश में भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ने का दावा करने वाली सरकार ने इन काला धन रखनेवालों के खिलाफ कोई पुख्ता कार्रवाही नहीं की। नोटबंदी को सरकार ने काले धन पर प्रहार के रूप में पेश किया था। मगर 99% के लगभग नगदी बैंकों में वापस जमा हो गयी। इसका एक अर्थ यह भी लिया जा सकता है कि नोटबंदी ने काले धन को सफेद कर दिया।

घोटाले : राफेल लड़ाकू विमान घोटाला देश में चर्चा का विषय बना हुआ है। कहा जा रहा है कि कांग्रेस राज में बोफोर्स तोप के घोटाले से यह कई गुना बड़ा है। सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्ता प्रशांत भूषण ने आरोप लगाया कि बोफोर्स 64 करोड़ रुपये का घोटाला था, जिसमे तीन-चार प्रतिशत कमीशन दिया गया था। राफेल घोटाले में कमीशन कम से कम 30 प्रतिशत है। अनिल अम्बानी को 21000 करोड़ रुपये का कमीशन दिया गया है। मजे की बात यह है कि मोदीजी जो कहते थे 'न खाऊंगा न खाने दूंगा' वे इस घोटाले की संयुक्त संसदीय समिति में जांच कराने को तैयार नहीं हैं। जब सच को आंच नहीं, तो यह वे लोग ही बता सकते हैं कि घोटाले की जांच कैसे राष्ट्रविरोधी है और जांच कराने में क्या खतरा है? प्रसिद्ध अंग्रेजी अखबार दि हिन्दू ने भी राफेल घोटाले के संबंध में कई दस्तावेज छापे हैं। इनमें यह इंगित होता है कि इसमें प्रधानमंत्री कार्यालय भी संलिप्त था। सरकार पर राफेल घोटाले को छिपाने के लिए सुप्रीम कोर्ट को गलत सूचनाएं देकर गुमराह करने के भी आरोप हैं। नीरव मोदी, ललित मोदी, विजय माल्या, मेहुल चौकसी आदि पर बैंकों के हजारों करोड़ रुपये मार कर भाग जाने के आरोप हैं। सरकार उन्हें देश में लाने व उन्हें सजा देने का नाटक कर रही है, जबकि यह सब जानते हैं कि इनके भाजपा के उच्च नेताओं से सीधे संबंध हैं। अडाणी व अम्बानी के हितैषी के तौर पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदीजी का नाम सदैव आता रहा है। भारत के आडिटर जनरल (सीएजी) के मुताबिक अडाणी विभिन्न संदेहास्पद सौदों में शामिल रहे हैं। यह भी बात सामने आयी है कि अडाणी समूह से सम्बद्ध शिपिंग योजना के लिए देश के जहाजरानी से जुड़े कानूनों को भी बदला गया है। अब यह चमत्कार कैसे हुआ कि भाजपा के अध्यक्ष श्री अमित शाह के बेटे जय अमितभाई शाह का कारोबार मोदी सरकार बनने के बाद मात्र दो-तीन वर्षों में सोलह हजार गुना बढ़ गया है? जबकि इसके पहले यह कम्पनी घाटे में थी।

भ्रष्टचार निरोधी कानूनों को किया भोथरा

मोदी सरकार भ्रष्टाचार से लड़ने में तनिक भी गंभीर नहीं

(शेष पृष्ठ 7 पर)

कॉमरेड सी. के. लुकोस स्मृति व्याख्यान

कॉमरेड सी के लुकोस ऐसे नेता थे जिन्हें कॉमरेड तहेदिल से मानते थे – प्रभास घोष

एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) के पोलिट ब्यूरो सदस्य और केरल के पूर्व राज्य सचिव कॉमरेड सी.के. लुकोस का 13 फरवरी को तिरुवनंतपुरम में निधन हो गया। पार्टी की केन्द्रीय कमेटी की ओर से उनकी स्मृति सभा 25 फरवरी को पश्चिम बंगाल के हावड़ा शहर स्थित शरत सदन में आयोजित की गई थी। सभा की अध्यक्षता पार्टी के पोलिट ब्यूरो के सदस्य कॉमरेड के. राधाकृष्ण ने की। पार्टी के केन्द्रीय कमेटी सदस्य और केरल राज्य सचिव कॉमरेड वी. वेणुगोपाल ने भी दिवंगत नेता कॉमरेड सी.के. लुकोस को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए दिल को छू जाने वाला भाषण दिया। मुख्य वक्ता पार्टी के महासचिव कॉमरेड प्रभास घोष थे। उनका भाषण यहां प्रकाशित किया जा रहा है।

आप सभी यह जानते हैं कि हम जो जिन्दा हैं और महान मार्क्सवादी चिंतनकार कॉमरेड शिवदास घोष के छात्र हैं, स्मृति सभा में दिवंगत नेताओं और कार्यकर्ताओं के जीवन-संघर्ष को एक उद्देश्य के साथ याद करते हैं कि संघर्ष से हम सीख ले सकें। आप यह भी जानते हैं कि हमारी पार्टी सिर्फ एक पार्टी नहीं है। हमारी पार्टी एक नए तरह का परिवार है। जब पूंजीवादी समाज के घोर पतन द्वारा आये दिन पनपाये और बढ़ाये जा रहे सड़े-गले माहौल और मूल्यहीनता के संकट में सामाजिक और पारिवारिक जीवन तबाह हो रहा है, कॉमरेड शिवदास घोष की शिक्षाओं के आधार पर, हम उन्नत कम्युनिस्ट नीति-नैतिकता की बुनियाद पर एक नए तरह का परिवार बनाने के संघर्ष में लगे हुए हैं। हमारा रिश्ता केवल काम लेने-देने और कितना काम किया इसकी निगरानी करने से जुड़ा हुआ रिश्ता नहीं है, बल्कि यह रिश्ता महान क्रांतिकारी विचारधारा, नीति-नैतिकता और मूल्यबोध पर आधारित दिल की उच्चतर भावनाओं वाला रिश्ता है। नतीजतन, जब हम इस परिवार के एक सदस्य को खो देते हैं, जब हम अग्रणी सदस्य को खो देते हैं, तो यह सभी के लिए बहुत दर्दनाक होता है। आप जो लोग यहां सभा में जुटे हैं, पोलिट ब्यूरो के दिवंगत कॉमरेड लुकोस को जानते हैं। कुछेक ने दूर से उनको सभाओं में भी देखा होगा। लेकिन केरल के बाहर के साथी उनके बेमिसाल संघर्ष और केरल में पार्टी को बनाने में उनकी भूमिका से बहुत ज्यादा परिचित नहीं है। यह हमारी विफलता है। इससे पहले, हमारे केंद्रीय नेताओं को एक सीमित क्षेत्र में ही जाना जाता था। देश के अन्य हिस्सों में दूसरे साथियों को उनके संघर्ष और उनकी भूमिका से वाकिफ होने का शायद ही कोई मौका मिलता था। हाल ही में हुए पार्टी के तीसरे महासम्मेलन के बाद, इस प्रक्रिया को बदल दिया गया है ताकि केंद्रीय कमेटी के नेता पूरे देश में कॉमरेडों को जान सकें, कॉमरेड उन्हें अच्छी तरह से जान जाएं। इसलिए मैं इस विषय से संबंधित कुछ मुद्दों पर बात करना चाहूंगा।

मैं आपको बताना चाहता हूं कि यहां से बहुत दूर अरब सागर के तट पर, कॉमरेड शिवदास घोष की शिक्षाओं के आधार पर, कॉमरेड लुकोस जैसे चरित्र का गठन कैसे हुआ। केरल में हमारी पार्टी का काम 1968-69 में शुरू हुआ। पश्चिम बंगाल के इंजीनियरिंग कॉलेज से पास एक एआईडीएसओ कार्यकर्ता शिक्षक के तौर पर क्वीलोन इंजीनियरिंग कॉलेज में गया था। उन्हें पार्टी की कुछ किताबें और कॉमरेड शिवदास घोष की रचनाएं ले जाने के लिए कहा गया ताकि वह वहां कुछ प्रचार कर सके। उनके प्रयास से वहां कुछ छात्र पार्टी की ओर आकर्षित हुए। कॉमरेड लुकोस उनमें से एक थे। उस समय, कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती को केरल भेजा गया था। उन्होंने वहां एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। लेकिन अचानक, हमने कॉमरेड नटराजन को खो दिया, जो इन इंजीनियरिंग छात्रों में सबसे होनहार था। उनके द्वारा चित्रित कॉमरेड शिवदास घोष की तस्वीर अभी भी कोलकाता कार्यालय में लगी है। उनके करीबी दोस्त कॉमरेड लुकोस थे। इनमें से कुछ कॉमरेडों ने केरल में पार्टी का काम शुरू किया। कॉमरेड लुकोस कॉमरेड नटराजन की अचानक मृत्यु पर बेहद परेशान और व्यथित हो गए थे। लेकिन अपने दु:ख से उभर कर और हिचकिचाहट को दूर कर, वे पार्टी की अधिकाधिक जिम्मेदारी लेने के लिए आगे आए। यहां मैं आपको एक और पहलू के बारे में बताने की जरूरत महसूस करता हूं। जब केरल में हमारी पार्टी का काम शुरू हुआ, तो देश में हमारी पार्टी आज की तुलना में बहुत कम जानी जाती थी। आज जैसा हाल आप देखते हैं, तब वैसा नहीं था। दक्षिण भारत में एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) का नाम, कॉमरेड शिवदास घोष का नाम नहीं पहुंचा था। पश्चिम बंगाल की तरह, अविभाजित सीपीआई केरल में एक बहुत बड़ी ताकत थी। उनकी पार्टी के गठन के शुरुआती दौर के नेता ईमानदार और संघर्षशील थे। केरल में सीपीआई ने राजशाही के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी। उनके नेता बहुत लोकप्रिय थे। 1957 में, सीपीआई ने केरल में पहली सरकार बनाई थी। ऐसी थी उनकी ताकत और भूमिका। जब इसकी दोफाड़ होकर 1964 में सीपीआई (एम) बनी, तब उसमें अविभाजित सीपीआई का एक बड़ा हिस्सा शामिल हो गया था। उस समय उनके नेता भी संघर्षशील थे। उस समय सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी, चीन की कम्युनिस्ट पार्टी का समर्थन उन्हें प्राप्त था। इसलिए लोग उन्हें कम्युनिस्ट मानते थे। नतीजतन, केरल में लोग हमसे यह सवाल किया करते थे कि जब सीपीआई (एम), सीपीआई मौजूद हैं, जन आन्दोलन गठित कर रही हैं और सोवियत व चीनी कम्युनिस्ट पार्टी का समर्थन उन्हें प्राप्त है, तो आप कम्युनिस्ट होने का दावा कैसे कर सकते हैं? पश्चिम बंगाल में भी 1948-52 में इसी तरह के सवालों का हमें सामना करना पड़ा था। केरल में भी मामला वैसा ही था। कॉमरेड लुकोस सरीखे नेताओं को ऐसे सवालों का सामना करना पड़ा, इनसे निपटना पड़ा और तमाम बाधाओं को पार करना पड़ा था। आपको केरल में पार्टी संगठन के निर्माण और विकास का इतिहास जानने की जरूरत है। ऐसी स्थिति में केवल कुछ ही साथियों ने पार्टी बनाने की पहल की। उनमें से कुछ इस कठिन संघर्ष को नहीं चला पाये और पिछड़ गए। उसके बाद जब पार्टी का तत्कालीन राज्य सचिव मार्क्सवाद-लेनिनवाद-शिवदास घोष चिंतन से भटक गया, तो केरल राज्य पार्टी को और अधिक संकट का सामना करना पड़ा। कॉमरेड वेणुगोपाल और अन्य तब छात्र थे। संकट की इस घड़ी में कॉमरेड लुकोस आगे आए और पार्टी को बचाने की जिम्मेदारी ली। फिर उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। यहाँ मैं कॉ. लुकोस के संघर्ष के इस पहलू का विशेष जोर देकर उल्लेख करना चाहूँगा।

एक बात और कहना चाहता हूं। हम जो यहां मंच पर हैं, उनमें से ज्यादातर कॉमरेड शिवदास घोष के कमोबेश सानिध्य में रहे हैं। कई लोगों ने उन्हें करीब से देखा है और उनके सानिध्य में रहे हैं। दूसरी ओर, कॉमरेड लुकोस ने सभाओं में कॉमरेड शिवदास घोष को शायद ही देखा हो। ज्यादा से ज्यादा इतना हो सकता है कि दोनों के बीच कुछ शब्दों का आदान-प्रदान हुआ हो। लेकिन उन्हें कॉमरेड शिवदास घोष के घनिष्ट संपर्क में आने का ज्यादा मौका नहीं मिला। लेकिन फिर भी वे कॉमरेड शिवदास घोष की रचनाओं को गहराई से पढ़कर उनकी अमूल्य क्रांतिकारी शिक्षाओं का सारतत्व आत्मसात करने में सफल हुए थे। एक तरफ, केरल पार्टी का संकट था और कुछ जूनियर कामरेडों का मनोबल और भरोसा बनाये रखने का काम था, जबकि दूसरी तरफ उन्हें खुद को एक योग्य कम्युनिस्ट बनाने के लिए जीवन के तमाम पहलुओं को समेटे हुए एक कठिन संघर्ष चलाना था। चुपचाप, यह कष्टसाध्य संघर्ष चलाते गए, इस तरह वे अपने आपको लगातार आमूल-चूल बदलते गए और अपने संघर्ष में और भी आगे बढ़ते रहे। कॉमरेड वेणुगोपाल से आपने सुना है कि कैसे उन्होंने परिवार को भी प्रभावित किया। इसलिए उन्होंने अपने परिवार में और बाहर भी जीवन के सभी क्षेत्रों में संघर्ष किया। उन्होंने कहीं भी समझौता नहीं किया। यहाँ आप एक मार्क्सवादी सिद्धांत की मूल्यवान शिक्षा का वास्तविक प्रतिफलन पाते हैं। जैसाकि मार्क्सवादी ज्ञान सिद्धांत में दिखाया गया है, बाहरी द्वंद्व परिवर्तन की परिस्थिति होती है और आंतरिक द्वंद्व परिवर्तन का मूल कारण होता है। बाहर का प्रभाव तभी प्रभावी होता है जब परिवर्तन की अत्यावश्यकता और वांछनीयता को हृदय से लिया जाता है। कई लोग अग्रणी नेताओं की सौबत में रहने और कई किताबें पढ़ने के बाद भी खुद को बदल नहीं पाते हैं। दूसरी तरफ कुछ कॉमरेड ऐसे होते हैं जो उच्चतर नेतृत्व के घनिष्ट संपर्क में आने का मौका नहीं मिलने पर भी और दूर दराज कहीं रहने पर भी क्रांतिकारी शिक्षाओं को ग्रहण करने, खुद को बदल डालने और अपना स्तर सुधार कर लगातार उन्नत से उन्नततर करते जाने में सक्षम हुए। यह कैसे संभव बनाया जा सकता है– इसके एक ज्वलंत उदाहरण थे कॉमरेड लुकोस।

कॉमरेड लुकोस के नेतृत्व में, केरल पार्टी ने कदम-कदम पर सीपीआई (एम) जैसी ताकत से लड़ाई लड़ी है, उसके तमाम झूठे प्रचार और हमलों का मुकाबला बहादुरी के साथ किया है और जीत हासिल की है। हमारे खिलाफ सीपीआई (एम) ने जो दुष्प्रचार और कुत्सा फैलाने का अभियान चलाया, उसे केरल पार्टी विफल कर पाई है। इस सराहनीय संघर्ष के जरिये हमारा पार्टी संगठन अब पूरे राज्य भर में फैल गया है। मैं ताजा सांगठनिक रिपोर्ट पढ़कर सुनाता हूं। केरल में 14 जिलों में से 11 निर्वाचित जिला कमेटियाँ हैं। दो जिलों में सांगठनिक कमेटियाँ हैं। बाकी बचे जिले में भी काम शुरू हो गया है, लेकिन अभी कोई कमेटी नहीं बनी है। केरल में पार्टी के सदस्य और आवेदक सदस्य एक हजार से अधिक हैं। साथ ही हजारों समर्थक हैं। राज्य में एआईयूटीयूसी, एआईडीएसओ, एआईडीवाईओ और एआईएमएसएस सभी जन संगठन और वर्ग संगठन क्रियाशील हैं। एआईयूटीयूसी से 26 पंजीकृत ट्रेड यूनियनें संबद्ध हैं। विज्ञान और चिकित्सा संगठन काम कर रहे हैं। कॉ. वेणुगोपाल ने अपने भाषण में बताया कि कॉ. शिवदास घोष की शिक्षाओं के अनुसार वे केरल में 'जनकिय प्रतिरोध समिति' नामक एक राज्य-व्यापी जनकमेटी बनाने में सक्षम हुए हैं। यह उनकी एक उपलब्धि है। अभी तक कोई राज्य ऐसी कमेटी नहीं बना पाया है। जस्टिस कृष्ण अय्यर अपनी अन्तिम सांस तक उसके चेयरमैन थे। केरल में इस समिति के नेतृत्व में कई आंदोलन हुए हैं। यह समिति आज भी काम कर रही है। इसके माध्यम से जस्टिस कृष्ण अय्यर के साथ पार्टी का ऐसा गहरा संबंध बना था कि वे कलकत्ता में कई कार्यक्रमों में आए। केरल पार्टी यह काम कर सकी थी। वे केरल में शिक्षा बचाओ समिति के साथ वहां के जाने माने शिक्षाविद और पूर्व कुलपति डॉ. करीम को जोड़ने में सक्षम हुए थे। बाद में डॉ. करीम पार्टी के समर्थक बन गए। इस तरह वे केरल के कई बुद्धिजीवियों को लामबंद करने में सक्षम हुए। कॉमरेड लुकोस में बुद्धिजीवियों के साथ-साथ आम मेहनतकश लोगों को भी आकर्षित करने की काबिलियत थी। केरल राज्य पार्टी की एक और बड़ी उपलब्धि है–एक चिकित्सा केंद्र या अस्पताल की स्थापना जो वे बहुत लंबे समय से राज्य के गरीब लोगों का बहुत सस्ते में स्वास्थ्य देखभाल और इलाज करने के लिए चलाते आ रहे हैं। केरल राज्य कमेटी के एक पूरा समय देने वाले डॉक्टर कॉमरेड जो पार्टी की राज्य कमेटी के सदस्य हैं, वहां पूरे समय अपनी सेवा प्रदान कर रहे हैं। इसके अलावा, वे कई ऐसे संगठन भी बनाने में सफल हुए हैं, जैसे शराब-विरोधी समितियाँ, महिला अत्याचार-विरोधी समिति, किसान हित संरक्षण समिति, साम्राज्यवाद-विरोधी मंच। जनता के जीवन के इन ज्वलंत मुद्दों पर कई जन आन्दोलन किये हैं। जैसा कि केरल की महिलाओं का नर्सों के रूप में राज्य में नौकरी के अवसर नहीं मिलने पर वे केरल से बाहर विदेश सहित देश के अन्य राज्यों में जाने को मजबूर होती हैं। इन नर्सों को कार्यस्थलों पर कई कठिनाइयों और समस्याओं का सामना करना पड़ता है जिससे उनके अभिभावक लगातार चिंतित और आशंकित रहते हैं। इसे उठाने और फौरन तवज्जो देने लायक एक मुद्दे के रूप में देखते हुए राज्य पार्टी की पहल पर वहां नर्स-अभिभावक मंच बनाया गया है। केरल में पार्टी जनजीवन के कई ज्वलंत मुद्दों पर आम लोगों को शामिल करके लगातार अभियान चला रही है। जिसके चलते हमारी पार्टी लोगों का भरोसा जीतने में सक्षम हुई है और हमारे देश में जनता के उद्देश्य के लिए लड़ने वाली एकमात्र पार्टी के रूप में मान्यता हासिल की है। गत दिनों केरल में जो भयानक बाढ़ आई थी, जिसने केरल को तबाह कर डाला था, यह केवल हमारी पार्टी ही थी जो तुरंत बाढ़-पीड़ितों के बचाव व राहत कार्यों में पूरी ताकत के साथ जी-जान से कूद पड़ी थी और व्यापक पैमाने पर राहत कार्य चलाए थे। हमारी पार्टी के तमाम साथियों और समर्थकों ने इन राहत और बचाव कार्यों में बढ़चढ़ भाग लिया। कॉ. लुकोस इन गतिविधियों और आंदोलन के लिए प्रेरणा का स्रोत थे। आपने कॉ. वेणुगोपाल से सुना है कि केरल में कैसे कोम्सोमोल संगठन विकसित हुआ है।

हमारे पार्टी संगठन का एक विशेष और महत्वपूर्ण अंग है पार्टी सेण्टर जहां पार्टी कॉमरेड एक साथ रहते हैं। ये पार्टी सेण्टर

(शेष पृष्ठ 4 पर)

एक आदर्श कम्युनिस्ट चरित्र थे कॉमरेड लुकोस

(पृष्ठ 3 का शेष)

पार्टी संगठनों के शुरुआती स्तर के रूप में देखे जाते हैं जिन्हें संघर्ष की सुनिश्चित प्रक्रिया के जरिये पार्टी कम्यून के स्तर तक उन्नत किया जा सकता है। यह अवधारणा विश्व कम्युनिस्ट आंदोलन से पहले नहीं थी। कॉमरेड शिवदास घोष की शिक्षाओं पर आधारित यह संगठन का विशेष रूप है जिसका लक्ष्य-उद्देश्य है एक सामूहिक जीवन विकसित करना। सतत सामूहिक रहन-सहन, सतत सामूहिक चर्चा-बहस जो सतत सामूहिक कार्यकलाप की ओर ले जाए और सतत सामूहिक जीवन को और भी उन्नत-विकसित करे–यह काम करना पार्टी सेण्टरों का लक्ष्य-उद्देश्य है। यह बहुत कठिन संघर्ष है। इसमें द्वंद्व हैं, उलझनें हैं, कुछ गलतफहमियां होने की भी गुंजाइश है और इसमें कड़वाहट भी है। हमारे साथियों पर बुर्जुआ संस्कृति का प्रभाव पड़ता है। बुर्जुआ संस्कृति के हमले हैं। इसका असर पार्टी केंद्र पर भी पड़ता है। फिर इन सेण्टरों में कॉमरेड शिवदास घोष की उन्नत सर्वहारा संस्कृति हासिल करने का संघर्ष भी है। हम इन सेण्टरों को कॉमरेड शिवदास घोष की शिक्षा के आधार पर चलाते हैं। केरल में 26 ऐसे पार्टी सेण्टर हैं। उन सभी को कॉमरेड लुकोस द्वारा निर्देशित किया गया। भाषण देना, लेख लिखना, यहां तक कि जन आन्दोलनों का निर्माण करना बहुत आसान है, लेकिन एक एक करके व्यक्तियों के एक समूह को नए आदर्श से लैस करना, उन्हें कॅरियरवाद से मुक्त करना, परम्परागत पारिवारिक जीवन से बाहर लाना और बुर्जुआ बुराइयों के बहुमुखी हमलों से उनकी रक्षा करना, और इस प्रकार उन्हें एक सही कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यकर्ताओं के रूप में विकसित करना कोई आसान काम नहीं है। कॉमरेड लुकोस ऐसे कुछ सौ कार्यकर्ता तैयार करने में सफल हुए। केरल में, पार्टी के सौ से अधिक कुल वक्ती कार्यकर्ता हैं, जो अपने घरों को छोड़ आये हैं, जिन्होंने अपने सभी व्यक्तिगत हितों को तज दिया है और जो पार्टी के लिए समर्पित हैं। किसने उन्हें प्रेरित किया? वह नेता कौन था? वह नेता था कॉमरेड सी. के. लुकोस जो कॉमरेड शिवदास घोष की शिक्षा से उन्हें लैस कर सका।

कार्यकर्ता केवल उन्हीं नेताओं के आह्वान पर प्रत्युत्तर देते हैं, जो सब कुछ पीछे छोड़ कर आगे आते हैं, जिनके आचरण-व्यवहार, संस्कृति और कार्यों में और व्यक्तिगत जीवन के तमाम पहलुओं में जिनकी कथनी और करनी एक है। वे नेता भी दूसरे कॉमरेडों को आकर्षित करते हैं जो उपदेश वे देते हैं अपने जीवन में उस पर अमल करने के लिए ईमानदारी से संघर्ष करते हैं। कॉमरेड लुकोस उपरोक्त स्तर के नेता थे और इसी वजह से वे कॉमरेडों को प्रेरित करने में सक्षम थे। उन्हें 1988 में प्रथम केरल राज्य सम्मेलन में राज्य सचिव चुना गया था। लेकिन दरअसल इससे पहले ही वे नेता के रूप में उभर कर आ गए थे। कॉमरेड शिवदास घोष कहा करते थे कि दो तरह के नेता होते हैं। एक तरह के नेता सम्मेलन में निर्वाचित होते हैं। लेकिन एक दूसरी तरह के नेता होते हैं, जो चाहे निर्वाचित हों या न हों, कार्यकर्ताओं का आदर, भरोसा और विश्वास हासिल करने में सक्षम हुए हैं और इस तरह उनके द्वारा तहेदिल से वे नेता मान लिए गए हैं। कॉमरेड लुकोस इस दूसरी तरह के नेता होने का स्तर प्राप्त कर पाये थे। वे हर कार्यकर्ता की हर समस्या को बड़े धैर्य से सुनते थे और गहरे प्यार, स्नेह-दुलार के साथ उसकी मदद करते थे। मैंने देखा है कि वे सुना ज्यादा करते थे, लेकिन बोलते बहुत कम थे। वे कुछ शब्दों में ही कॉमरेडों और अन्यों को बात समझा और मनवा देते थे। लेकिन जो कुछ और जब कभी बोलते थे वह बहुत तर्कसंगत होता था और इस ढंग से बोलते थे कि वह दूसरों के दिल को छू सके। हर कोई, उनकी उम्र की परवाह किए बिना, उनसे खुले मन से घुल-मिल जाता था। उन्होंने अपनी हरकतों, आचरण-व्यवहार और हावभाव से ऐसा कभी प्रदर्शित नहीं किया कि वे इतने बड़े दर्जे के नेता थे। वे साथियों से एक दोस्त और सहयोगी के रूप में घुल-मिल जाते थे। वे दूसरे साथियों की आलोचना को सहज स्वीकार कर लेते थे। उन्होंने उस आलोचना के बारे में लिखा था जो पार्टी के पिछले महासम्मेलन में हुए आलोचना-आत्मालोचना सत्र का हवाला देते हुए उन्होंने मुझे लिखा था कि 'मेरी आलोचना हुई है, मैं इससे खुश हूं।' कॉमरेड उन्हें कोई भी बात बताने या अपने किसी मतभेद को व्यक्त करने में कोई हिचक या संकोच महसूस नहीं करते थे। वे हमेशा साथियों को शिक्षित करते थे। उनसे सीखने को भी तैयार रहते थे। कॉमरेड शिवदास घोष के उत्कृष्ट

हावड़ा: सभा को संबोधित करते हुए कॉ. प्रभास घोष

छात्र के रूप में उनके द्वारा अर्जित उच्चतर गुणों से पार्टी के अन्य नेताओं और कार्यकर्ताओं को भी सीखना चाहिए। उनमें मार्क्सवादी साहित्य, कॉमरेड शिवदास घोष के भाषणों व रचनाओं के साथ-साथ हमारी पार्टी द्वारा प्रकाशित अन्य साहित्य को बारीकी से पढ़ने की आदत थी। इसके अलावा, वे साहित्य, विज्ञान और संस्कृति के विभिन्न विषयों का भी अध्ययन-मनन किया करते थे। वे हमारे देश और विदेश के साहित्य और दंतकथाओं को पढ़ते थे। बच्चों के दिमाग विकसित करने के लिए उन्हें महापुरुषों की जीवन से कहानियां सुनाते थे। इस प्रक्रिया में उन्होंने ऐसे कुछ सौ बच्चे विकसित किए थे और वे उनके पिता से भी बढ़कर थे।

जैसाकि आप जानते हैं, केरल की सरजमीन पर सीपीएम ने मार्क्सवाद-लेनिनवाद-साम्यवाद की छवि को काफी हद तक धूमिल कर दिया है। लेकिन उसी सरजमीन पर कॉमरेड शिवदास घोष की शिक्षाओं के आधार पर कॉमरेड लुकोस के योग्य नेतृत्व में केरल राज्य पार्टी मार्क्सवाद-लेनिनवाद की महानता और श्रेष्ठता को बुलंद कर सकी। चूंकि कॉमरेड शिवदास घोष की शिक्षाओं के आधार पर विकसित केरल में हमारे कॉमरेडों के आचरण-व्यवहार में सही कम्युनिस्ट चरित्र की झलक मिलती है, इसलिए इस राज्य का जागरूक तबका लगातार हमारी पार्टी की ओर आकर्षित हो रहा है। कॉमरेड लुकोस केरल की सरजमीन पर एक मॉडल कम्युनिस्ट चरित्र के रूप में उभरे थे। इसी वजह से उन्होंने पार्टी के बाहर के भी कई लोगों का सम्मान अर्जित किया। लेकिन उनमें तनिक भी अहंकार, घमंड और अपना दिखावा करने का रुझान नहीं था। 'मैंने यह किया, वह किया', या 'यह मेरी वजह से हुआ'–यह सब कहने की उनकी आदत नहीं थी। जब कभी वे हमसे चर्चा करते थे, वे ऐसे आचरण किया करते थे जैसेकि वे अधिकाधिक ज्ञान हासिल करने के लिए खुला मन रखने वाले छात्र हों। एक तरफ, वे जहां बहुत ही मृदुभाषी, विनम्र, सौम्य और मिलनसार थे, वहीं वे नीति-सिद्धांत के सवाल पर बहुत दृढ़ और समझौताहीन थे।

अपने राजनैतिक जीवन के शुरुआती चरण में वे जिस नेता के संपर्क में आये थे, जिसका वे बहुत ही आदर-सम्मान करते थे और जो बहुत अजीज था, प्यारा था, जब उन्हें उस नेता के नैतिक पतन का पता चला, तो वे बहुत व्यथित हुए। वे उस समय बहुत ही बीमार थे और बिस्तर पर थे। लेकिन वे उस नेता के दुर्व्यवहार की कड़ी आलोचना करने से कभी नहीं हिचकिचाए। उस नेता ने अपने पुराने रसूक की दुहाई देकर बार-बार उनसे अपील की। कॉमरेड शिवदास घोष ने मुजफ्फरपुर में एक राजनीति शिक्षण शिविर में कहा था कि 'अगर आप देखें कि मैं शिवदास घोष जो नीति-नैतिकता के बारे में बोल रहा हूं, इससे जरा भी भटक जाऊं तो मुझे पार्टी से निष्कासित कर देना।' कॉमरेड शिवदास घोष की इस शिक्षा को कॉमरेड लुकोस ने तहेदिल से आत्मसात किया था। कॉमरेड शिवदास घोष ने हमें चेतावनी दी है कि कम्युनिस्ट चरित्र हासिल करने का संघर्ष बहुत कठिन संघर्ष है। उन्होंने दिखाया था कि हम सभी बुर्जुआ समाज से आए हैं। यह बुर्जुआ समाज, पूंजीवादी समाज 19वीं सदी में या बीसवीं सदी की शुरुआत में जैसा था, वैसा समाज नहीं है। आज का बुर्जुआ समाज बहुत गंदा, भद्दा और सड़ा-गला है। हम ऐसे माहौल में रहते हैं। नतीजतन, सर्वोच्च नेता से लेकर हर कोई कॉमरेड इस प्रदूषित वातावरण की चपेट में आकर लगातार प्रभावित हो रहा है। हर पल उसे अलर्ट रहते हुए इससे लड़ना पड़ता है। अन्यथा, प्यार-स्नेह के सवाल पर या नाम-यश की ललक जैसी कमजोरी पाकर ये बुर्जुआ बुराइयां हमारे अन्दर घर कर सकती हैं। अगर हम सतर्क नहीं रहे तो छिपे तौर पर यह हमला हम पर हो सकता है और घुन की तरह यह हमारे अन्दर क्रान्तिकारी चरित्र के मर्म को ही चट कर देगा। सर्वोच्च नेता भी इस हमले की मार से अछूते नहीं हैं। उन्होंने आगे कहा था, 'किसी भी नेता के अंधभक्त नहीं बने रहो। पार्टी का हित, क्रांति का हित सर्वोपरि है। इसलिए, अगर आप किसी नेता में दोष या भटकाव देखों तो पार्टी और क्रांति के हित में उसके खिलाफ साहस के साथ उठ खड़े हो और लड़ो।' आज मैं खुलकर और बेहिचक कह सकता हूं कि कॉमरेड सी. के. लुकोस ने साबित कर दिया कि वे कॉमरेड शिवदास घोष के योग्य छात्र थे। उन्होंने पल भर के लिए भी संकोच किये बिना अपने पूर्व नेता की कमी-खामियों और भटकाव की कड़ी और समझौताहीन आलोचना की। यह हम सब के लिए एक अनुकरणीय शिक्षा भी है।

मार्क्सवादी होने के नाते, हम जानते हैं कि कोई व्यक्तित्व, नेतृत्व, काबिलियत जन्म-जात नहीं होती है। यह महज ईमानदारी से कोशिश करने से भी हासिल नहीं किया जा सकता है। फिर, सामान्य स्तर का कोई व्यक्ति भी अपने आपको काफी ऊंचे स्तर तक ऊपर उठा सकता है/ सकती है। यह इस बात पर निर्भर करता है कि कोई अपने जमाने की सर्वोच्च विचारधारा को कैसे और कितना समझता है और उस विचारधारा को मानकर सभी पहलुओं को समेटते हुए अपने जीवन में उस लागू करने के लिए कैसे संघर्ष करता है और इस तरह आगे कदम बढ़ाता जाता है। ढेर सारी समस्याएं आएंगी, रास्ते में बहुत सारी बाधाएं आएंगी। यहां तक कि अचानक हमले भी हो सकते हैं। हो सकता है कि कोई संगी-सहयोगी साथ छोड़ जाए, दोस्त दुश्मन बन जाए, हमसफर पक्ष बदल कर विरोधियों में शामिल हो जाए। इसमें से कुछ भी हो सकता है। यहां तक भी हो सकता है कि जिसे मैंने चाहा, प्यार किया और माना वह निम्न स्तर पर उतर आया और पतित हो गया। कॉमरेड घोष ने हमें सिखाया हैं कि एसी घटना घटने पर कोई समझौता नहीं करना चाहिए। अलगाव होता है, तो बेशक हो जाए। इस मामले में शान्तिपूर्ण सह अस्तित्व का कोई सवाल ही नहीं उठ सकता है। एक आदमी जो गोलियों का बहादुरी के साथ सामना कर सकता है, प्यार-स्नेह के सवाल पर डगमगा भी सकता है और कमजोर पड़ सकता है। इस मामले में भी कॉमरेड शिवदास घोष की चेतावनी है।

हावड़ा : कॉ. लुकोस की तस्वीर पर पुष्पांजली अर्पित करते हुए कॉ. प्रभास घोष

हमारी पार्टी में कॉमरेड शिवदास घोष के मागदर्शन पर चलते हुए नए तरह के इन्सान बनाने का संघर्ष चल रहा है। उन्होंने खुद भी ऐसे किरदारों को बनाया। आज दुनिया में कम्युनिस्ट आन्दोलन संकट में है। आज के दौर में कम्युनिस्ट बनना बहुत मुश्किल है। 1940 के दशक और 1950 के दशक में विश्व कम्युनिस्ट आन्दोलन की शानदार हवा के अनुकूल वातावरण में कइयों ने कम्युनिज्म को गले लगाया था और कम्युनिस्ट हो गए थे। महान स्टालिन के नेतृत्व में तब सोवियत समाजवाद लगातार लंबे डग भरता जा रहा था। चीन की क्रांति ने शानदार जीत हासिल की थी। वियतनाम में मुक्ति-संघर्ष की एक बड़ी जबरदस्त लहर चल रही थी। इन सब अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं ने कम्युनिज्म के पक्ष में एक जबरदस्त लहर पैदा कर दी थी। इसलिए मेहनतकश लोगों में कम्युनिस्ट बनने की तीव्र इच्छा उत्पन्न हुई थी। आज प्रतिक्रियावादी लहर ने पूरी दुनिया को अपनी गिरफ्त में ले लिया है। कम्युनिज्म को लेकर लोगों में बहुत सारी भ्रम-भ्रान्तियां और निराशा-हताशा

(शेष पृष्ठ 6 पर)

देश भर में याद किया गया आजादी आन्दोलन के इंकलाबी शहीदों को

23 मार्च, आजादी आंदोलन के महान क्रांतिकारी भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु का 88वां शहीदी दिवस एसयूसीआई (सी), एआईडीएसओ, एआईडीवाईओ, एआईएमएसएस, एआईकेकेएमएस, एआईयूटीयूसी द्वारा देश भर में मनाया गया। इस अवसर पर, देश के हर राज्य की राजधानी और महत्वपूर्ण शहरों, कस्बों व गाँवों में इन महान शहीदों की याद में सभाएं, विचार गोष्ठियां, फिल्म शो आदि आयोजित किए गए। शहीद-ए-आजम भगत सिंह के जीवन-संघर्ष और क्रान्तिकारी चरित्र पर प्रकाश डालते हुए वक्ताओं ने शोषण से मुक्ति के लिए भगत सिंह के जीवन-संघर्ष और विचारों को जानने के लिए छात्र-नौजवानों व आम लोगों का आह्वान किया। गौरतलब है कि कई लोगों ने इस पहल का जवाब दिया और हर तरह के शोषण-जुल्म के खात्मे के लिए आगे आने का संकल्प लिया। छात्र-युवा कार्यकर्ताओं ने हर शिक्षण संस्थान और गली-मुहल्ले में भगत सिंह के विचारों को पहुंचाने का बीड़ा उठाया।

दिल्ली : किशनगंज, दिल्ली में 24 मार्च को एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) की सेंट्रल दिल्ली लोकल कमेटी द्वारा भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के महान क्रांतिकारियों शहीद-ए-आजम भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव को याद किया गया। इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम और जनसभा का आयोजन किया गया। सभा की अध्यक्षता एसयूसीआई (सी) की सेंट्रल दिल्ली लोकल कमेटी की सचिव और एआईएमएसएस की दिल्ली राज्य सचिव कॉमरेड रितु कौशिक ने की। सभा के मुख्य वक्ता थे पार्टी की राज्य सांगठनिक कमेटी के सदस्य कॉमरेड हरीश त्यागी। इसे एआईडीएसओ दिल्ली अध्यक्ष कॉमरेड प्रशांत कुमार, एआईएमएसएस की दिल्ली राज्य कमेटी की सदस्य कॉमरेड आशा रानी और एआईडीवाईओ की किशनगंज यूनिट के प्रभारी कॉमरेड सिद्धार्थ आहूजा ने भी संबोधित किया।

हरियाणा : बहादुरगढ़ में एआइकेकेएमएस की ओर से शहीद भगत सिंह, राजगुरु व सुखदेव के शहीदी दिवस पर गांव मांडौठी में श्रद्धांजलि सभा की गई। मुख्य वक्ता एआईकेकेएमएस के प्रदेश सचिव जयकरण मांडौठी रहे। सभा में हरीश कुमार, रामकिशन, उमेद सिंह दहिया, जयकिशन दलाल, विजय कुमार ने भी विचार रखे। **अच्छेज** गांव में 25 मार्च को एसयूसीआई(सी) द्वारा भगत सिंह, राजगुरु व सुखदेव को श्रद्धांजलि दी गई। एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) राज्य कमेटी सदस्य जयकरण मांडौठी मुख्य वक्ता थे। सभा में पार्टी के जिला सचिव कॉ. हरीश कुमार, किसान संगठन एआइकेकेएमएस के नेता कॉ. करतार सिंह अच्छेज ने भी बात रखी। **सोनीपत** में कॉ. इन्द्र सिंह, अमित कुमार, राजेश, भारत, नरेन्द्र के नेतृत्व में एआईडीएसओ व एआईडीवाईओ की ओर से 22 मार्च को शहर में मशाल जुलूस निकाला गया। **तावडू** में एआईडीवाईओ व एआईडीएसओ के सांझे आह्वान पर इस दिन सैनीपुरा, तावडू की चौपाल मे इकठ्ठा होकर वहां से मशाल जुलूस निकाला गया। मुख्य वक्ता एआईडीवाईओ के जिला अध्यक्ष बृजमोहन, देवीलाल, कुलदीप, मोहन, बीना, कंचन, सचिन सैनी ने भी बात रखी। **गुरुग्राम** में एसयूसीआई (कम्युनिस्ट), एआईडीवाईओ, भवन निर्माण कारीगर मजदूर यूनियन की तरफ से 23 मार्च को स्थानीय कमला नेहरू पार्क में हुई शहीदों की श्रद्धांजलि सभा की अध्यक्षता कॉ. बलवान सिंह ने की। संचालन कॉ. राजेश कुमार ने किया। मुख्य वक्ता एसयूसीआई (सी) के कॉमरेड सरवन कुमार थे। **रेवाड़ी** में 23 मार्च को एसयूसीआई (सी) ने राव तुलाराम पार्क में सभा करके शहीदों को श्रद्धांजलि दी।। मुख्य वक्ता पार्टी के जिला सचिव कॉ. राजेन्द्र सिंह थे। 23 मार्च को नेहरू पार्क, **भिवानी** में शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की एवं उनके जीवन-संघर्ष पर चर्चा की। एसयूसीआई (सी) के राज्य कमेटी सदस्य कॉ. रामफल और लोकल कमेटी सदस्य कॉ. राजकुमार बासिया भी मौजूद थे। 23 मार्च को पंचायत भवन, **तोशाम** में शहीदों की स्मृति सभा की अध्यक्षता एसयूसीआई(सी) लोकल कमेटी सचिव कॉ. रोहतास सिंह सैनी ने की। मुख्य वक्ता पार्टी के जिला कमेटी सदस्य और एआईयूटीयूसी के जिला सचिव कॉ. धर्मवीर सिंह, जिला कमेटी सदस्य व एआईकेकेएमएस के जिला प्रधान कॉ. जिले और जिला कमेटी सदस्य कॉ. सुखवीर सिंह ने सभा को संबोधित किया। **चरखी दादरी** के हाथी पार्क में एसयूसीआई (सी), एआईयूटीयूसी से संबंद्ध भवन निर्माण कारीगर मजदूर यूनियन, एआईडीवाईओ और ऑल इण्डिया महिला सांस्कृतिक संगठन की तरफ से सभा का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता एसयूसीआई (सी) के जिला सचिव कॉ. राजकुमार जांगड़ा रहे। सभाध्यक्ष का. मनीराम थे। सभा का संचालन एआईडीवाईओ के जिला सचिव कॉ. सन्दीप मेहरा ने किया। एआईएमएसएस की ओर से प्रियंका ने अपने विचार रखे। **नारनौल** में 23 मार्च को एसयूसीआई (सी) नारनौल की जिला कमेटी की ओर से शहीद भगतसिहं, राजगुरु व सुखदेव की याद में हुई सभा की अध्यक्षता मजदूर नेता कॉ. सीताराम ने की। सभा को मुख्य वक्ता जिला सचिव कॉ. ओमप्रकाश के अलावा सूबेसिंह, शेरसिंह, सतीश कुमार, आदि ने भी सम्बोधित किया। **कुरूक्षेत्र** के सन्निहत पार्क में एसयूसीआई (सी) की कैथल-कुरूक्षेत्र जिला कमेटी के सचिव कॉ. राजकुमार की अध्यक्षता में सभा की गई। इसका संचालन कॉ. कमल ने किया। मुख्य वक्ता कॉ. बाबूराम थे।

राजस्थान : एआईडीवाईओ के तत्वावधान में 23 मार्च को शहीद दिवस मैन बाजार पार्क **पिलानी** में मनाया गया। इसमें एआईडीवाईओ के विष्णु वर्मा, एसयूसीआई(सी) के कॉ. शंकर दहिया आदि ने भगतसिंह के चित्र पर पुष्पा अर्पित किये।

गुजरात : 23 मार्च को एआईडीएसओ, एआईडीवाईओ और अखिल भारतीय महिला सांस्कृतिक संगठन द्वारा **अहमदाबाद** शहर में सरदार पटेल स्टेडियम में शहीदों को पुष्पांजलि अर्पित की गई। गुजरात विश्वविद्यालय पुस्तकालय लॉन में कार्यक्रम अपनी 30 साल पुरानी परंपरा के अनुसार आयोजित होने वाला था। लेकिन अंतिम क्षण में, विश्वविद्यालय के अधिकारियों ने चुनाव आचार संहिता के झूठे बहाने आयोजित कार्यक्रम को अस्वीकार कर दिया। लेकिन शहीदों को श्रद्धांजलि देने के लिए छात्रों ने विश्वविद्यालय के गेट के बाहर कार्यक्रम का आयोजन किया। कई इलाकों में कार्यक्रम हुए।

झारखण्ड : हजारीबाग में 23 मार्च को स्थानीय भगत सिंह चौक पर ऑल इंडिया डीएसओ छात्र संगठन जिला कमेटी एवं अखिल भारतीय सर्वधर्म कौमी एकता के संयुक्त तत्वावधान में मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता जीवन यादव एवं विनोद सिंह ने संयुक्त रूप से की। मुख्य वक्ता एआईडीएसओ के राज्य उपाध्यक्ष आशीष कुमार, जिला सचिव शेखर उपाध्याय, अहमद शाकिब खान, जिला उपाध्यक्ष पूजा कुमारी, स्वराज इंडिया के राष्ट्रीय कमेटी सदस्य मिथिलेश दांगी, मुमताज आलम तथा कौमी एकता के प्रदेश प्रभारी निसार खान ने भी सभा को संबोधित किया। धन्यवाद ज्ञापन मिथिलेश कुमार ने किया।

पांडिचेरी में शहीद भगत सिंह स्मृति सभा में एसयूसीआई (सी) के पोलिट ब्यूरो सदस्य कॉ. के. राधाकृष्ण ने बात रखी।

कर्नाटक : एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) पार्टी की मैसूर जिला कमेटी ने मैसूर में 24 मार्च को शहीद भगत सिंह के शहीदी दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया। सैकड़ों लोगों ने कार्यक्रम में भाग लिया और उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

उत्तराखण्ड : एआईडीएसओ द्वारा श्रीनगर, गढ़वाल में प्रभात फेरी निकाली गई। साथ ही स्थानीय गोला पार्क में शाम को प्रशासनिक बाधाओं को पार करके श्रद्धांजलि सभा की गई। जिसमें ऑल इंडिया डीएसओ की नेत्री भारती जोशी ने अपने विचार रखे। भगत सिंह सुखदेव राजगुरु अमर रहें, इंकलाब जिंदाबाद के नारे लगाए गए।

उत्तर प्रदेश : भगत सिंह, राजगुरु व सुखदेव की शहादत दिवस की पूर्वसंध्या पर कोमसोमोल की तरफ से 22 मार्च को जौनपुर जिले के **फत्तूपुर** गांव में कैंडल मार्च व सभा की गई। सभा की अध्यक्षता दरगाही निषाद ने की व संचालन अनीता निषाद ने किया। सभा को कॉ. मिथिलेश कुमार मौर्य, कॉ. हीरालाल गुप्त, आजाद गुप्ता, संतोष प्रजापति, गुलाब निषाद, विकास निषाद, अजय निषाद आदि लोगों ने संबोधित किया। 23 मार्च को ऑल इंडिया डीवाईओ, कोमसोमोल और ऑल इंडिया किसान खेत मजदूर संगठन की तरफ से **सांगोडीह** गाँव में सभा आयोजित की गई। सभा की अध्यक्षता कॉमरेड रवि प्रकाश सिंह ने की। संचालन का. रामप्यारे एडवोकेट ने किया। सभा को कॉमरेड्स मिथिलेश कुमार मौर्य, राजबहादुर विश्वकर्मा, मनोज विश्वकर्मा आदि ने संबोधित किया। 24 मार्च को **पूरा चिंता** गांव में की गई सभा की अध्यक्षता श्याम बहादुर सिंह ने की व संचालन राजबहादुर विश्वकर्मा ने किया। सभा को पंकज कुमार तिवारी, आलोक मित्र, रामप्यारे एडवोकेट,कॉमरेड मिथिलेश कुमार मौर्य आदि ने संबोधित किया। कॉ. देवीशंकर, अनीता निषाद आदि ने गीत प्रस्तुत किए। 27 मार्च को **बबुरा** गांव में कोमसोमोल, एआईकेकेएमएस और एआईडीवाईओ की तरफ से सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया। 23 मार्च को **जौनपुर** शहर स्थित भगत सिंह पार्क में माल्यार्पण, बैज-धारण, प्रदर्शनी, बुक स्टॉल व जनसभा का आयोजन किया गया। इसकी अध्यक्षता कॉ. प्रवीण कुमार शुक्ला ने की व संचालन कॉ. विकास कुमार मौर्य ने किया। सभा को कॉ. दिलीप कुमार खरवार, महेंद्र कुमार मौर्य, शिवशंकर सिंह, इंद्रजीत सिंह, लाल प्रकाश इत्यादि ने संबोधित किया। सभा में कॉ. अरमान अली व पूर्णजीत गुप्ता ने क्रांतिकारी गीत प्रस्तुत किया। 24 मार्च को **पहितियापुर** गांव में स्थित भगत सिंह की प्रतिमा पर माल्यार्पण करके श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई। सभा की अध्यक्षता पहितियापुर ग्राम प्रधान कॉ. दिनेशकांत पाण्डेय ने की। सभा को एसयूसीआई (सी) के पहितियापुर लोकल सचिव कॉ. अशोक कुमार खरवार व दिलीप कुमार खरवार ने सम्बोधित किया। संचालन कॉ. सन्तोष प्रजापति ने किया। कार्यक्रम में महिमा व अन्य बच्चों ने गीत व कविताएं प्रस्तुत की। 23 मार्च को **प्रतापगढ़** के ढकवां बाजार में डॉ. बी.आर. अंबेडकर शिक्षण संस्थान में एआईडीवाईओ के तत्वावधान में शहीदों की तस्वीरों पर पुष्पांजलि अर्पित की गई व विचार गोष्ठी हुई। ढकवां के खेलकूद मैदान में खिलाड़ियों ने शहीदों की तस्वीरों पर पुष्पांजलि अर्पित की एवं उनके जीवन-संघर्ष पर चर्चा की। उपरोक्त शिक्षण संस्थान से ढकवां इब्राहिमपुर रोड, जौनपुर रोड, प्रतापगढ़ रोड, सुल्तानपुर रोड होते हुए कैंडिल मार्च निकाला गया व नुक्कड़ सभा भी हुई। एआईडीवाईओ के ब्लॉक सचिव आसपुर देवसरा कॉ. अच्छेलाल और एआईकेकेएमएस प्रतापगढ़ जिलाध्यक्ष कॉ.शेषनाथ तिवारी ने नौजवानों को संबोधित किया। सभा का संचालन एआईडीवाईओ के जिला संयोजक कॉ. रामकुमार यादव ने किया।

मध्य प्रदेश : 24 मार्च को **इंदौर** में भगत सिंह को याद किया गया। **देवास** में एआईयूटीयूसी, एआईडीएसओ और ऑल इण्डिया महिला सांस्कृतिक संगठन द्वारा एक सप्ताह तक भगत सिंह शहीदी दिवस पर विभिन्न बस्तियों व गांवों में सभाएं की गई। देवास विज्ञान महाविद्यालय में एआईडीएसओ द्वारा 23 मार्च को भगत सिंह के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की गई। स्थानीय सयाजी द्वार से गजरा गया चौराहे तक एक वाहन रैली की गई। एआईयूटीयूसी के जिला प्रभारी हिमांशु श्रीवास्तव ने बात रखी। भंडारी फाइल्स, आजाद और बागली अलायंस के मजदूरों की ओर से भी भगत सिंह, सुखदेव व राजगुरु की मूर्ति पर पुष्प अर्पण कर श्रद्धांजलि दी गई। रैली में बड़ी संख्या में छात्र, नौजवान और मजदूर शामिल हुए।

बिहार : भोजपुर जिला काइलवर प्रखण्ड के अंतर्गत **कायमनगर** बाजार स्थित शहीद-ए-आजम भगत सिंह की प्रतिमा पर 23 मार्च को पुष्पांजलि अर्पित की गई और स्मृति सभा की गई। सभा की अध्यक्षता एसयूसीआई(सी) की भोजपुर जिला सांगठनिक कमेटी के सचिव कॉ. धर्मात्मा शर्मा ने की। वक्ताओं ने शहीद भगत सिंह के कृतित्व पर प्रकाश डाला।

(शेष पृष्ठ 8 पर)

R.N.I. No.- 43022/85
P.R.No.-DL(C)-01/1123/2018-2020
Posting at New Delhi PSO on 7–8 and 22–23 Fortnightly

कॉमरेड शिवदास घोष चिंतन की रचना थे कॉमरेड लुकोस

(पृष्ठ 4 का शेष)

पैदा हो गई हैं। आज की इस प्रतिकूल परिस्थिति में कम्युनिस्ट आन्दोलन में शामिल होना, कम्युनिस्ट होना, कम्युनिस्ट चरित्र हासिल करना और बचाये रखना सचमुच बहुत कठिन संघर्ष है। लेकिन कॉमरेड लुकोस ने एक मिसाल पेश की कि कैसे एक कम्युनिस्ट ऐसे मुश्किल हालात में आजीवन कम्युनिस्ट चरित्र बनाये रखने का संघर्ष चला सकता है। कॉमरेड राधाकृष्ण ने कॉमरेड लुकोस द्वारा अपने जीवन के आखिरी दौर में बीमारी से ग्रस्त गिरती हुई सेहत की परवाह नहीं करते हुए चलाये गए शानदार संघर्ष के बारे में आपको बताया। मैंने भी इसके कुछ पहलुओं को देखा। खराब सेहत के बावजूद वे कभी केंद्रीय कमेटी की बैठकों में गैर हाजिर नहीं रहे। वे सेहत खराब होने की बिनाह पर कभी रुके नहीं, आने से आनाकानी नहीं की। जब वे शिबपुर सेण्टर में रह रहे थे, वे विभिन्न सैद्धांतिक सवालों पर चर्चा किया करते थे। जब वे बिल्कुल अक्षम हो गए, तो मैं केरल में दो बार गया। एक स्टडी क्लास में मैंने देखा कि कॉमरेड उन्हें कुर्सी पर उठाये हुए जहां क्लास चल रही थी, उस स्थल पर ला रहे थे ताकि वे क्लास सुन सकें। वे कुर्सी पर ज्यादा देर बैठे नहीं रह सकते थे। इसलिए उनको बगल के कमरे में ले जाया गया। मैंने सोचा कि शायद वे वहां आराम करने चले गये हैं। बाद में, मुझे पता चला कि वे उस कमरे में बिस्तर पर लेट कर सुन रहे थे। ऐसी थी उनकी ज्ञान-पिपासा और सीखने की उत्सुकता। अगली बार भी मैंने वही चीज देखी। उन्होंने कभी नहीं कहा कि तबीयत खराब है, इसलिए मैं किसी मीटिंग में नहीं जा सकता। वे न चल-फिर सकते थे और न ही एक शब्द भी बोल सकते थे, लेकिन उसका मस्तिष्क सक्रिय था, ज्यादा से ज्यादा जानने की चाह प्रबल थी। मैंने उनके चेहरे पर बीमारी के कोई हावभाव कभी नहीं देखे। यहां तक कि जब वे न अपने हाथ-पैर हिला सकते थे, न चल सकते थे, न खा सकते थे, न अपने प्रयास से बिस्तर पर लेट सकते थे, लेकिन तब भी कॉमरेडों या हमसे मिलने पर उनके चेहरे से ऐसी गंभीर बीमारी का कोई आभास नहीं मिलता था। उनका चेहरा सदा हंसता-मुस्कुराता हुआ रहा है। उनकी आंखों में हमेशा चमक रही। पिछली बार जब मैं उनसे मिलने गया था, तो उन्होंने मुझे न सुनाई देने वाली आवाज में केरल पार्टी को देखने की बात कही और कहा कि मैं अपनी सेहत का ख्याल रखूं। मुझसे इतनी बात कहने के बाद भी उन्हें दूसरे कॉमरेडों की मदद लेने की जरूरत पड़ी थी जो उनके होठों के हिलने से अंदाजा लगाकर बता सकते थे कि वे क्या कह रहे हैं। मुझे अच्छे से याद है कि उन्हें महसूस हो गया था कि उनकी मौत आने वाली है। इसलिए, केरल राज्य पार्टी को देखना केंद्रीय कमेटी का कर्तव्य है। इतनी ही बात नहीं थी। उन्होंने मुझसे एक और अनुरोध किया कि मुझे केरल राज्य सचिव के पद से फारिग कर देना चाहिए और केंद्रीय कमेटी से भी हटा देना चाहिए। लेकिन यहाँ मैं उनसे असहमत था। मैंने कहा कि आपको केंद्रीय कमेटी में बने रहना चाहिए क्योंकि हमें आपके सुझाव, राय, सलाह-मशविरे की जरूरत है। वे मान गए। जब गत साल नवम्बर में घाटशिला में पार्टी के तीसरे महासम्मेलन का प्रतिनिधि अधिवेशन चल रहा था, मैंने देखा कि कई कॉमरेड अपने कैमरों से फोटो खींच रहे थे। यह आजकल सामान्य बात है। फिर, जब अंत में मैं और कॉमरेड हैदर मंच से नीचे उतर रहे थे, तो केरल के एक कॉमरेड, जो फोटो खींच रहे थे, हमारे पास आये और कहा कि कॉमरेड लुकोस आपसे बात करना चाहते हैं। तब मुझे पता चला कि कॉमरेड लुकोस ने कभी बैठे हुए, कभी बिस्तर पर लेट कर वीडियो के जरिये पार्टी के महासम्मेलन की पूरी कार्रवाही को देखा था। उन्होंने पार्टी के महासम्मेलन की पूरी कार्रवाई इसमें हुए विचार-विमर्श को ध्यान से सुना। इतने गंभीर रूप से बीमार होते हुए भी उनकी उत्सुकता देखिए कितनी तीव्र थी। मैंने उनको वीडियों में देखा। वे हमारी तरफ देखकर मुस्कराये और हमें लाल सलाम किया। हमने भी उनको लाल सलाम किया। तब मुझे महसूस हुआ कि यह उनका हमें आखिरी लाल सलाम था।

कॉमरेड, मैं इस कॉमरेड को कैसे भूल सकता हूं? यह कॉमरेड शिवदास घोष चिंतन की रचना है। यह हम सबके सामने एक उदाहरण है। उनके क्रान्तिकारी दमखम और दृढ़ इरादे के सामने बीमारी ने अपनी हार मान ली। उन्होंने बीमारी से जुड़े सब दु:ख-दर्दों को परास्त कर दिया। उन्होंने मौत को मात दे दी। वे दक्षिण भारत में पहले राज्य, केरल में एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) पार्टी के निर्माता के रूप में पीढ़ी दर पीढ़ी केरल के साथियों के दिलों में रहेंगे। वे भारत के कॉमरेडों के दिलों में भी हमेशा के लिए अमर रहेंगे। ऐसा किरदार कभी भुलाया नहीं जा सकता है। उन्होंने नेताओं के एक दस्ते को यह भी सिखाया था कि कॉमरेड शिवदास घोष की शिक्षाओं के आधार पर और जनवादी केंद्रीयता को क्रियाशील रखते हुए सामूहिक कार्यकलाप को कैसे सुनिश्चित किया जा सकता है। मुझे विश्वास है कि कॉमरेड लुकोस की इस दुखद मौत से उत्पन्न हुए रिक्त स्थान को भरने और उनके अधूरे कामों को पूरा करने के लिए वे कॉमरेड एक आदमी की तरह उठ खड़े होंगे। यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

कॉमरेड, मैं एक बात और कहना चाहूंगा। इससे पहले भी अलग-अलग सभाओं मेंने यह बात बतायी है। आज अन्य राजनीतिक मुद्दों पर मैं चर्चा में नहीं जाऊंगा। यह सही है कि पार्टी की ताकत बढ़ रही है। हम जहां भी कोशिश कर रहे हैं, जहां भी हम कॉमरेड घोष के चिंतन को लोगों तक पहुंचा पाते हैं, हमें लोगों की तरफ से उसका रेसपोन्स यानी माकूल जवाब मिलता है। कुछ अच्छी प्रतिक्रिया मिलती है। आज अन्य सभी पार्टियां बदनाम हो चुकी हैं, वे सैद्धांतिक तौर पर पूरी तरह दिवालिया हो चुकी हैं। अविभाजित सीपीआई, फिर सीपीआई (एम) जैसी सोशल डेमोक्रेटिक पार्टियां, जो कभी हमारी प्रगति में एक बड़ी बाधा पैदा करती थी, अब खुद अपनी कब्र खोद रही हैं। सीपीआई (एम) अब कुछेक संसदीय सीटों के लिए विभिन्न बुर्जुआ दलों के दरवाजे पर भीख माँग रही है। अब सीपीआई (एम) की स्थिति ऐसी हो गई है। आने वाले दिन हमारी पार्टी के लिए और भी अधिक संभावनाएं और अवसर प्रदान करने वाले हैं। लेकिन यहां एक चेतावनी है। महान लेनिन ने एक समय कहा था कि मार्क्सवाद का विस्तार वैचारिक संघर्ष में गिरावट से संबद्ध होता है। ऐसी बात नहीं है कि ऐसा होना ही है, यह नियति है। लेकिन ऐसा होने की एक आशंका रहती है। जब कम लोग होते हैं, तो उन्हें कठिन संघर्ष करना पड़ता है, बेहद कठिन और भारी अड़चनों को पार करना पड़ता है और कई प्रतिकूलताओं से जूझना पड़ता है। इस प्रक्रिया में वे लोग क्रान्तिकारी विचारधारा से लैस और संघर्ष में तप कर फौलादी, मजबूत व समर्थ हो जाते हैं। लेकिन जब दिक्कतें और बाधाएं पहले की तुलना में कम होती हैं और सफलता हासिल करना आसान होता है, तो उन्नत सैद्धांतिक स्तर और चरित्र हासिल करने का संघर्ष ढीला पड़ने लगता है। इसके बारे में लेनिन ने हमें खबरदार किया था। हमारे कामरेडों, हमारे नेताओं, सेंट्रल कमेटी के युवा सदस्यों, राज्य सचिवों, जिला सचिवों, सभी को अपना सैद्धांतिक और सांस्कृतिक स्तर ऊंचा उठाने के लिए लगातार संघर्ष चलाना होगा। जूनियर कॉमरेड अपने से सीनियर कॉमरेडों का अंधानुकरण नहीं करेंगे। वे जब कभी नेताओं की ओर से कोई गलती होते देखें, तो साहस के साथ इसे दिखाएं। अगर शादीशुदा कॉमरेड अपने जीवन साथी को कोई गलती करते देखें, तो उन कमी-खामियों का डट कर मुकाबला करें। बेटे-बेटियों, बच्चों के प्रति रवैये के सवाल को लेकर भी डटकर मुकाबला करें। याद रखें, आज मार्क्सवाद-लेनिनवाद-शिवदास घोष चिंतन ही एकमात्र सही आदर्श है, दुनिया में एकमात्र आशा की किरण है। सारी मानव सभ्यता आज गहरे संकट में है। न केवल आर्थिक संकट है, बल्कि मानवीय मूल्यों का संकट, मानवता का संकट, नीति-नैतिकता का संकट भी है। इन्सान कहलाने लायक शायद ही कोई है। संपूर्ण मानव जाति की आज यह दशा है। इस चारों तरफ छाये हुए घोर अंधकामय हालात में हमें इस पार्टी को जीवित रखना है, इसे बचाना है और मार्क्सवाद-लेनिनवाद-शिवदास घोष चिंतनधारा के महान झंडे को बुलंद रखना है। पार्टी को और भी मजबूत करना है। केवल संख्या में बढ़ोतरी करने से ही काम नहीं चलेगा। हमें जिस चीज की जरूरत है वह है गुणवत्ता। और गुणवत्ता बनाये रखने के लिए हमारा सैद्धांतिक-सांस्कृतिक स्तर ऊंचा उठाने का संघर्ष निरंतर चलाना निहायत जरूरी है। जैसाकि कॉमरेड शिवदास घोष ने हमें सिखाया था कि पार्टी को बचाने के लिए किसी को मत बख्शों, यहां तक कि पार्टी के महासचिव को भी। इन शब्दों के साथ, मैं आपको कॉमरेड शिवदास घोष की एक अपील पढ़कर सुनाऊंगा, जो आज भी प्रासंगिक है। 1974 में, कॉमरेड सुबोध बनर्जी की स्मरण सभा में, उन्होंने कहा था, ''...मैंने पहले भी कहा है कि आने वाला समय हमारे लिए काफी महत्वपूर्ण है। इस पार्टी को जल्द ही क्रांति को नेतृत्व देने लायक राजनैतिक और सांगठनिक तौर पर ताकतवर बनाना होगा। पहले सोचने से भी हम यह काम नहीं कर पाते। लेकिन, अब हमारी जो संख्या है, उससे हमारा हरेक नेता व कार्यकर्ता अगर सोचकर इसे साकार करने की कोशिश करे तो यह काम हम कर सकते हैं। उसके लिए हरेक कार्यकर्ता जो यहाँ मौजूद है, उसे अपनी खुद की पहलकदमी और बुद्धि के अनुसार यह काम करते जाना होगा। चाहे कर सके या न कर सके, चाहे सफलता मिले या विफलता–काम से जी नहीं चुराना है, काम करते जाना है। इस काम की प्रक्रिया होगी–एक ओर आप पार्टी की राजनीति की समझदारी लेते जा रहे हैं और दूसरी ओर इस राजनीति के आधार पर जिस किसी भी क्षेत्र में हो, लोगों को संगठित करने की कोशिश कर रहे हैं। ... अत: इस मूल बात को आपको समझना होगा की भारत क्रांति की संभावनाओं से भरपूर है। आपको समझना होगा कि सभी पहलुओं से अब मौजूदा समाज में आगे और कुछ अच्छा देने लायक नहीं बचा है। शासक वर्ग किसी भी तरह के टोटकों से इस समाज को अब टिकाये नहीं रख पा रहा है। भारतीय समाज मुक्ति-वेदना से छटपटा रहा है। मात्र लोगों के सचेत और संगठित राजनैतिक आंदोलन का अभाव है। साथ ही जितनी न्यूनतम ताकत होने से देश में विद्यमान क्रांतिकारी परिस्थिति का इस्तेमाल करते हुए क्रांति के जोश से भरपूर लोगों को एक सतत, संगठित, दीर्घस्थायी क्रांतिकारी लड़ाई में उतारा जा सकता है–सही मायने में उतनी ताकत से लैस एक क्रांतिकारी पार्टी का अभाव है। क्रांति की वास्तविक स्थिति के लिए सारी जमीन तैयार है, सारे अवयव यानी साजो-सामान और गोला-बारूद तैयार है। लोग परिवर्तन चाहते हैं। शासक वर्ग के पास पुराने समाज की सैन्य ताकत पर निर्भर रहने के अलावा अब और कोई चारा नहीं बचा है। इसके अलावा वे लोगों की अज्ञानता और राजनैतिक भ्रान्तियों का सहारा ले रहे हैं। लेकिन यह कोई बहुत बड़ी बात नहीं है। वास्तविक स्थिति का दबाव लोगों पर इतना पड़ रहा है कि उसके दबाव से भ्रान्तियों भरा कोई तर्क, धर्म का कोई व्याहमोह–इनमें से कोई भी लोगों को रोक नहीं पायेगा। क्रांति का ज्वार अगर एक बार शुरू हो गया तो किसी भी दलील से लोगों को रोका नहीं जा सकता। ... लेकिन जो चीज नहीं है, वह है सही क्रांतिकारी राजनैतिक लाइन, विचारधारा और सर्वव्यापक क्रांतिकारी सिद्धांत के आधार पर बनी आवश्यक ताकत से लैस एक सही क्रांतिकारी पार्टी। पार्टी तो है, पार्टी तो बन चुकी है, लेकिन जनता के विक्षोभ-असंतोष को केन्द्र कर जब लड़ाइयां फूट पड़ती हैं, तो उन लड़ाइयों को एक सुनिश्चित, सही क्रांतिकारी लाइन पर सही दिशा में ले जाकर दीर्घस्थायी लड़ाई छेड़ देने लायक ताकत आज भी इस पार्टी ने हासिल नहीं की है। यह ताकत जैसे भी हो कार्यकर्ताओं को जी-जान से यथाशीघ्र हासिल करनी होगी।''

यह कामरेड शिवदास घोष की अपील है। कॉमरेड सी.के. लुकोस के बहुत ही दुर्लभ और अनुकरणीय चरित्र से आवश्यक सीख लेकर लौटें और हमारे महान नेता व शिक्षक कॉमरेड शिवदास घोष की इस अपील को अपने दिलों में संजोकर आप इस सभा से जाएंगे। इसी के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूं।

कॉमरेड सी. के. लुकोस लाल सलाम!
हमारे महान नेता, शिक्षक व पथप्रदर्शक
कॉमरेड शिवदास घोष लाल सलाम!

शहर में पानी के बढ़ाये गए रेटों का विरोध

भिवानी : शहर में पानी के बढ़ाये गए रेटों को वापिस लिए जाने सहित पानी से जुड़ी समस्याओं को लेकर एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) जिला कमेटी भिवानी के एक प्रतिनिधि मंडल ने 28 मार्च को जिला सचिव कॉमरेड राजकुमार जांगड़ा के नेतृत्व में उपायुक्त भिवानी को मांगों का ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में मांग की गई कि भिवानी शहर में पानी के बढ़ाये गए रेट तुरंत वापिस लेकर लोगों को राहत प्रदान की जाए, पानी के बिलों में धांधलियां और विसंगतियां दूर कर इन्हे दुरुस्त किया जाए, साफ पानी उपलब्ध करवाया जाए, पर्याप्त पेयजल की आपूर्ति सुनिश्चित की जाए।

उपायुक्त महोदय के न मिलने पर अतिरिक्त उपायुक्त महोदय को ज्ञापन सौंपा गया।

लोकसभा चुनाव ...

(पृष्ठ 2 का शेष)

है। भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने के लिए जो मौजूदा कानून हैं, मोदी सरकार ने उन्हें भी लकवाग्रस्त कर दिया। मोदी सरकार ने तरह-तरह के बहाने बनाते हुए सुप्रीम कोर्ट के निर्देशों के बावजूद लोकपाल की नियुक्ति नहीं की थी। भ्रष्टाचार निवारण कानून में संशोधन कर ऐसा प्रावधान कर दिया है कि नौकरशाहों पर मुकदमा चलाने के लिए ही नहीं, अपितु भ्रष्टाचार के आरोपों की जांच करने के लिए भी लोकपाल को पूर्व मंजूरी लेनी होनी यानी प्रक्रिया कठिन कर दी गयी है। व्हिसल ब्लोअर्स संरक्षण कानून 2014 में मोदी सरकार ने परिवर्तन करके यह प्रावधान कर दिया है कि ऐसे मामले, जो राष्ट्रीय सुरक्षा के मद्देनजर आर्थिक व सामरिक हितों से जुड़े हैं, वे इस कानून के दायरे में नहीं होंगे। आर्थिक व सामरिक दो ऐसे बड़े क्षेत्र हैं, जिनमें भ्रष्टाचार के अधिकांश मामले पाये जाते हैं। इस कानून के परिवर्तन से ये सारे मामले दबे रह जायेंगे, क्योंकि भ्रष्टाचार उजागर करने वाले को उच्च पदों पर आसीन लोगों से कोई सुरक्षा नहीं मिलेगी।

लोकतांत्रिक संस्थाओं का अतिक्रमण–फासीवाद के लक्षण

नरेन्द्र मोदीजी ने जब पहली बार संसद में कदम रखा था, तो उन्होंने संसद की चौखट पर अपना सिर रखकर यह संदेश देने का प्रयास किया था कि वे बहुत लोकतांत्रिक सोच वाले हैं। मगर जल्द ही सच्चाई लोगों के सामने आ गयी। उन्होंने संस्थाओं के काम-काज में ज्यादा दखल दिया। नतीजतन कुछ लोकतांत्रिक संस्थाओं ने मोदी सरकार के काम करने के ढंग पर कड़ा एतराज जताया। कई संस्थाओं के मुखिया को अपना इस्तीफा देना पड़ा। इसने एक बार फिर लोगों को आपातकाल के दिनों की याद दिला दी। सरकार की कार्यप्रणाली के खिलाफ न्यायपालिका से पहला विरोध उठा, जब देश की सर्वोच्च न्यायालय के चार वरिष्ठ जजों ने प्रेस कांफ्रेंस कर कहा कि लोकतंत्र खतरे में है और 20 साल बाद हमें कोई यह न कहे कि हमने अपनी आत्मा बेच दी है, इसलिए हमने मीडिया से बात करने का फैसला किया। उन्होंने यह भी कहा कि लोकतंत्र को बरकरार रखने के लिए यह जरूरी है कि सुप्रीम कोर्ट जैसी संस्था सही ढंग से काम करे। रिर्जव बैंक ऑफ इण्डिया से दूसरा विरोध उठा, जब आरबीआई के गवर्नर उर्जित पटेल ने इस्तीफा दे दिया। मीडिया में यह रिपोर्ट आ रही थी कि कुछ बातों को लेकर सरकार उन पर अनुचित दबाव डाल रही थी। इस तरह केन्द्रीय बैंक की स्वायत्तता पर हमला शुरू हो गया था। प्रेस ने इसे आर्थिक आपातकाल की संज्ञा दी। सीबीआई सरकार की खीज का तीसरा निशाना बनी। ऐसा भी शायद भारत के इतिहास मे पहली बार हुआ कि सीबीआई के डायरेक्टर आलोक वर्मा को तमाम कानूनी व परम्परागत मान्यताओं को धता बताते हुए डायरेक्टर पद से हटाकर मोदी सरकार ने अपने चहते अधिकारी को डायरेक्टर बना दिया। खबरें आ रही थीं कि आलोक वर्मा बहुचर्चित राफेल सौदे को लेकर एफआईआर दर्ज करने वाले थे, इसलिए बहाना बनाकर उन्हें हटा दिया गया। राष्ट्रीय सांख्यिकी आयोग सरकार की तानाशाही का चौथा निशाना बना। यहां से भी सरकार को तीव्र विरोध का सामना करना पड़ा। यह तब हुआ, जब राष्ट्रीय सांख्यिकी आयोग के कार्यकारी अध्यक्ष पी. सी. मोहनन व साधारण सदस्य जे वी मीनाक्षी ने इस्तीफा दे दिया। इसका कारण यह बताया गया कि इस रिर्पोट में नोटबंदी के बाद कम हुई नौकरियों के आकड़े दिये गये थे। ये आंकड़े खुद प्रधानमंत्री के दावों के विपरीत थे। इससे सरकार व खुद प्रधानमंत्री की फजीहत होने की संभावना थी, इसलिए सरकार ने रिर्पोट जारी नहीं होने दी। इस प्रकार हम देखते हैं कि मोदी सरकार ने लोकतांत्रिक मर्यादाओं का उल्लंघन किया। यह शासन-प्रशासन का फासीवादी लक्षण है, जो बेहद चिन्ता का विषय है। यह काम उस आदमी की सरकार ने किया, जिसने संसद की दहलीज पर सिर रखा था। यह पाखण्ड है। इसके पीछे फासीवाद की आहट सुनाई दे रही है।

देश में साम्प्रदायिकता-जातिवाद की फूटपरस्ती का तांडव

देश की स्थिति का एक बहुत ही चिन्ताजनक पहलू यह है कि साम्प्रदायिकता, जातिवाद व क्षेत्रवाद से देश की जनता के बीच एक बड़ी दरार नजर आ रही है। इसमें मासूम व बेकसूर लोग मारे जा रहे हैं। गृहयुद्ध की आग में जल रहे दो-तीन देशों को यदि छोड़ दिया जाये, तो दुनिया में सबसे ज्यादा साम्प्रदायिक हिंसा हमारे देश में हो रही है। मोदी राज के तीन वर्षों की रिपोर्ट है, देश में 2276 जगहों पर साम्प्रदायिकता की आग लगी है। मानवता, आपसी सौहार्द, एकता और भाईचारे की दुश्मन इस साम्प्रदायिक हिंसा की आग में लगभग 7 हजार लोग घायल हुए और लगभग 300 बेकसूर लोगों की जानें चली गयीं। निस्संदेह इसमें बहुत बड़ा नुकसान अल्पसंख्यक मुस्लिम समुदय का हुआ। मगर असल बात यह है कि इस हैवानियत ने जान तो इंसान की ही ली है। यह किसी से छिपा नहीं है कि भाजपा व संघ परिवार से जुड़े संगठन इस खेल को खेल रहे हैं। वे गौरक्षा, लव जिहाद के नाम पर अल्पसंख्यकों पर हमले कर रहे हैं। गौरक्षा के नाम पर भी कई बेकसूर लोगों को पीट-पीट कर मौत के घाट उतार दिया गया हैं। दुख की बात है कि मोदी सरकार का प्रशासन इस प्रकार की हिंसा को रोकने के प्रति उदासीन है। इस प्रकरण में कहना होगा कि पूंजीवादी राजसत्ता के अंग पुलिस-प्रशासन में भी सापेक्ष निष्पक्षता काफी कम हो गयी है। दुर्भाग्यजनक बात यह है कि कई मामलों में अपराधी की जगह पीड़ित को ही गिरफ्तार कर लिया गया। इसने स्थिति को और भी नाजुक बना दिया है। इससे अल्पसंख्यको व दलितों के बीच भय, दुख व गुस्सा बढ़ रहा है। धीरे-धीरे एक खतरानाक स्थिति बन रही है।

भाजपा व संघ परिवार का अभियान सिर्फ मुस्लिम अल्पसंख्यकों व दलितों के खिलाफ ही नहीं है, बल्कि वह तर्क व विज्ञान के खिलाफ भी है। क्योंकि तर्क व विज्ञान उनके दर्शन की मानवसमाज-विरोधी समझ का भंडाफोड़ कर देता है, इसलिए वे तर्क व विज्ञान का भी गला घोंट देना चाहते हैं। इसी संदर्भ में उल्लेखनीय है कि तर्कशील नरेन्द्र दाभोलकर, गोविंद पनसारे, कलबुर्गी और गौरी लंकेश जैसे जाने-माने बुद्धिजीवियों की हत्याएं हुईं। हत्याओं की जांच कर रही एसआईटी का कहना है कि हत्याएं अलग-अलग जगह व समय पर हुई हैं, मगर हत्या में इस्तमाल की गयी पिस्तौल एक ही है और हत्याओं में संलिप्त लोगों का संबंध सनातन संस्था और उसकी हिन्दू जागृति समिति से है।

भाजपा व कांग्रेस दोनों ही पूंजीपतियों की विश्वसनीय प्रतिनिधि

लोगों के सामने एक-दूसरे के विकल्प के तौर पर दो गठबंधनों को पेश किया जा रहा है। एक भाजपा-नीत राजग और दूसरा कांग्रेस-नीत यूपीए। दरअसल ये दोनों ही पार्टियां और गठबंधन पूंजीपति वर्ग के ताबेदार हैं। इनकी नीतियों में कोई फर्क नहीं है। दोनों की ही नीतियां घोर जनविरोधी और फूटपरस्त रही हैं। दोनों ही गठबंधन स्थापित पूंजीवादी व्यवस्था को बरकरार रखने के लिए वचनबद्ध हैं। भाजपा ने पिछले पांच सालों से बुर्जुआ वर्ग के प्रति वफादार अन्य पार्टियों को साथ लेकर शासन किया है। कांग्रेस भी अकेले तौर पर पूर्ण बहुमत की संभावना न देखकर क्षेत्रीय बुर्जुआ पार्टियों से गठबंधन बना रही है। कहने की जरूरत नहीं है कि इन दोनों बुर्जुआ खेमों में गठबंधन बनाने के मामले में नीति, सिद्धांत, विचारधारा, कार्यक्रम कुछ भी समान होने का मामला नहीं है। कोई बात आड़े नहीं आ रही है। इनमें से किसी भी एक खेमे में जाने वालों के लिए विचारणीय बात केवल यही है कि कौन-सा खेमा उन्हें ज्यादा से ज्यादा सीटें दिलवायेगा। पूंजीपति वर्ग अपने स्वार्थ में हमेशा इस प्रयास में रहा है कि यहां द्विदलीय व्यवस्था हो। एक से लोग नाराज हो जायें, तो वह दूसरे को सत्ता में ला सके और बिना किसी बाधा के उसका शोषण-शासन जारी रहे। उसके लिए यह परेशानी की बात है कि भारत की विशेष स्थिति के कारण बहुत सारी पार्टियां हैं। क्षेत्रीय पूंजीपति अपने स्वार्थ पूर्ति के लिए क्षेत्रीय पार्टियों को भी बढ़ावा दे रहा है। ऐसे में गठबंधन बनाकर वह एक तरह से द्विदलीय व्यवस्था को ही लागू कर रहा है।

सीपीआई (एम)-सीपीआई की मौकापरस्त राजनीति

इस परिस्थिति में जब यह नितांत जरूरी था कि जनजीवन पर पूंजीपति वर्ग व उसकी राजनैतिक पार्टियों द्वारा किये जा रहे बेरहम हमलों के खिलाफ एक ताकतवर जन आंदोलन खड़ा किया जाये। इस आंदोलन के लिए असली वामपंथी व जनतांत्रिक शक्तियां एकजुट हों। ऐसे समय पर इन तथाकथित वामपंथी पार्टियों सीपीआई (एम), सीपीआई व सीपीआई (एम-एल) लिबरेशन ने आंदोलन से ही किनारा कर लिया। वे अभी ऐसा कोई काम नहीं करना चाहती हैं, जिससे पूंजीपति वर्ग नाराज हो। अत: वे पूंजीपति वर्ग के खुले या छिपे समर्थन से संसदीय चुनावी राजनीति करते हुए सत्ता के गलियारों में पहुंचना चाहती हैं। बस यही इन तथाकथित वामपंथी पार्टियों की राजनीति का आधार बनकर रह गया है। उनकी इन्हीं कारगुजारियों के कारण समय बीतने के साथ-साथ देश में वामपंथी आंदोलन भी कमजोर पड़ता जा रहा है। यह समझना कोई मुश्किल नहीं है कि इनकी वामपंथी राजनीति की लफ्फाजी का उद्देश्य अपने आदर्शहीन दोमुंहे आचरण को ढकना और जनमानस में भ्रम पैदा कर पूंजीवादी शोषण की हकीकत को छिपाना है। यही वजह है कि भाजपा गठबंधन के खिलाफ 'धर्मनिरपेक्ष शक्तियों' को एकजुट करने का नारा उठाकर वे कांग्रेस के साथ मौकापरस्त गठजोड़ करने की फिराक में हैं, जबकि कांग्रेस भी कोई धर्मनिरपेक्ष नहीं है। वह वही जातपांतवादी, क्षेत्रवादी, साम्प्रदायिक राजनीति कर रही है, जिसे 'नरम हिन्दुत्व' कहा जा रहा है। इस तरह वे वामपंथ को और भी कलंकित व कमजोर कर रही हैं।

चुनावों से सरकार बदलती है – व्यवस्था नहीं

देश में यह कोई पहला चुनाव नहीं है। पहले भी कई बार चुनाव हो चुके हैं। चुनावों में हार-जीत के जरिये कई पार्टियां सत्ता से हटायी और कई सत्ता में बिठायी गयी हैं। एमपी-एमएलए भी बहुत बार बदले गये हैं। लेकिन समय-समय पर सरकारों की अदला-बदली और रस्म अदायगी के तौर पर चुनावों के इस खेल से आम लोगों के जीवन में क्या कोई बदलाव आया? क्या उनकी हालत में जरा भी सुधार देख पाते हैं? जनता की हालत सुधरने की बजाय दिनो-दिन बिगड़ती जा रही है। पूंजीवादी शोषण-उत्पीड़न का दमघोंटू शिकंजा दिनो-दिन कसता जा रहा है। साफ जाहिर है कि चुनाव एक छलावा है, एक धोखा है। वह 'फूट डालो और राज करो' का अखाड़ा बन गया है। चुनावों में नकली मुद्दे उछालकर जनजीवन के असली मुद्दों से जनता का ध्यान हटाया जाता है ताकि लोग समाज हित के बार में बारीकी से सोच-विचार न करें; देश की सामाजिक, राजनैतिक व आर्थिक समस्याओं पर न सोचें; उम्मीदवारों के गुण-दोष, चरित्र व काबिलियत पर विचार न करें–इसका दुष्चक्र रचा जा रहा है। चुनाव पैसे का खेल हो गया है। मतदाताओं में आवश्यक राजनैतिक चेतना की कमी और उनकी घोर गरीबी का फायदा उठाकर पैसे के बल पर उनके विवेक को समाप्त किया जा रहा है। गरीब मतदाताओं को डर-भय दिखाकर और प्रचार माध्यमों का इस्तेमाल कर गरीब मतदाताओं से अपनी इच्छानुसार वोट डलवाकर पूंजीपति वर्ग की चहेती, उनकी भरोसमंद और ताबेदार पार्टियों के उम्मीदवारों को जिताया जा रहा है। चुनाव के नतीजे को प्रभावित करने के लिए प्रशासनिक शक्ति, पुलिस तथा अर्द्ध सैनिक बलों का भी इस्तेमाल किया जा रहा है। प्रशासनिक निष्पक्षता चुनावों में नदारद है। यह भी उजागर हो रहा है की जरूरत पड़ने पर वोटिंग मशीन की प्रक्रिया को भी बिगाड़कर मनमर्जी के परिणाम लिये जा रहे हैं। साफ जाहिर है कि तथाकथित स्वच्छ, निष्पक्ष, चुनाव प्रणाली ध्वस्त हो चुकी है। चुनाव से जनादेश, जनता की सही उम्मीदों-आकांक्षाओं और हसरतों का कोई प्रतिबिम्बन नहीं हो रहा है। इसलिए सम्पूर्ण चुनावी प्रक्रिया जनता का खून चूसनेवाले पूंजीपतियों के काले धन के रचे गंदे खेल में तब्दील हो चुकी है। जनता को समझना होगा कि राजनीति के नाम पर चल रहा है भ्रष्टाचार और मौकापरस्ती। देशसेवा की आड़ में की जा रही है पूँजीपतियों की स्वार्थपूर्ति। महंगाई, बेरोजगारी, अशिक्षा, स्वास्थ्य व अपसंस्कृति की समस्याएं चुनाव से दूर नहीं होंगी। पूंजीपतिपरस्त, भ्रष्ट, जातिवादी, साम्प्रदायिक व फूटपरस्त घटिया राजनीति को महज चुनाव से ही परास्त नहीं किया जा सकता। यह ऐतिहासिक सच्चाई है कि चुनावों के जरिये सिर्फ सरकारें बदलती हैं, लेकिन शोषणमूलक पूँजीवादी समाज और इसकी दमनकारी स्टेट मशीनरी नहीं बदलती। सत्तारूढ़ पूँजीपति वर्ग अपने राजनीतिक प्रबंधक के रूप में अपनी खास चहेती और भरोसेलायक इस या उस पार्टी को चुनता है और फिर धनबल, बाहुबल, मीडियाबल और प्रशासनिक बल प्रयोग करके उसे गद्दी पर बिठाता है। जब सत्तारुढ़ पार्टी अपनी जनविरोधी पूँजीपतिपरस्त नीतियों के कारण बदनाम हो जाती है और उसके खिलाफ जन आक्रोश और शिकवे-शिकायतें जमा होने लगती हैं, तो शासक पूँजीपति वर्ग अपने किसी दूसरे राजनीतिक प्रबंधक को चुनता है और पहले वाले प्रबंधक को हटाकर उसे गद्दी पर बिठा देता है। चुनावों में उम्मीदवारों व पार्टियों का चाहे जितना बड़ा रेला दिखाई दे, पूंजीपतियों के अखबार व प्रचार तंत्र चाहे जितने प्रकार के खेमे दिखायें, लेकिन राजनीति के केवल दो ही खेमे हैं, दो ही पक्ष हैं। एक, जनता की हर तरह से शोषण से मुक्ति के लिहाज से क्रांतिकारी पक्ष और दूसरा, पूंजीपति वर्ग की लूट का रक्षक क्रांति-विरोधी प्रतिक्रियावादी पक्ष, चाहे उनके नामों और झण्डों का रंग भले ही अलग-अलग क्यों न हो। इसलिए भाजपा व कांग्रेस के नेतृत्व में क्रमश: एनडीए और यूपीए नामक दो गठबंधनों को बेशक प्रचार माध्यम दो अलग-अलग पक्षों के रूप में दिखाते हैं। लेकिन ये दोनों एक ही पक्ष हैं। इन दोनों गठबंधनों का एक ही मकसद हैं, वह है देश के पूंजीपति वर्ग की सेवा करना। अत:, भारतीय जनता

(शेष पृष्ठ 8 पर)

R.N.I. No.- 43022/85
P.R.No.-DL(C)-01/1123/2018-20
Posting at New Delhi PSO on 7–8 and 22–23 of every month, Fortnightly , Date of Publication : April 5, 2019

एसयूसीआई (सी) तुच्छ चुनावी हित के लिए नहीं बल्कि जन आंदोलन की जरूरत से वाम एकता चाहती है

एर्नाकुलम : एमसीपीआई(यू) के महासम्मेलन को संबोधित करते हुए कॉमरेड के. राधाकृष्ण

केरल के एर्नाकुलम में अपनी चौथी पार्टी कांग्रेस के खुले अधिवेशन में भाग लेने के लिए मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया (यूनाइटेड) की केंद्रीय कमेटी के आग्रह पर एसयूसीआई (सी) के महासचिव कॉमरेड प्रभास घोष ने पार्टी के पोलिट ब्यूरो सदस्य कॉमरेड के. राधाकृष्ण को बिरादराना प्रतिनिधि के रूप में भेजा। उन्होंने 15 फरवरी को खुले अधिवेशन में बात रखी।

एमसीपीआई (यू) की चौथी कांग्रेस और इसके प्रतिनिधियों को तहेदिल से मुबारकबाद देते हुए कॉमरेड के. राधाकृष्ण ने पहले तो यह उम्मीद जाहिर की कि यह पार्टी कांग्रेस हमारे साझे दुश्मन पूंजीवाद-साम्राज्यवाद के खिलाफ तमाम वामपंथी और लोकतांत्रिक दलों और ताकतों के संयुक्त आंदोलन की गुंजाइश को और मजबूत करेगी। इसके बाद उन्होंने दिखाया कि तमाम वामपंथी ताकतें जानती हैं कि अमेरिकी साम्राज्यवादियों के नेतृत्व में पूंजीवादी-साम्राज्यवादी लूटेरे दुनिया भर में किस तरह जनविरोधी नीतियों पर चल रहे हैं। वे दुनिया के लोगों का बेइन्तहा शोषण और उत्पीड़न कर रहे हैं। हाल के दिनों में, उन्होंने इराक, ईरान, अफगानिस्तान और लीबिया जैसे कई देशों पर हमले करके इन पर अपना कब्जा जमा लिया है। अब वेनेजुएला पर उनकी गिद्ध दृष्टि लगी हुई है। हालांकि, यूरोप और अमेरिका में भी पूंजीवादी शोषण उत्पीड़न के खिलाफ एक पर एक आंदोलन उठ खड़े हो रहे हैं, लेकिन सही नेतृत्व की कमी के कारण वे सफल नहीं हो पा रहे हैं।

राष्ट्रीय स्थिति पर उन्होंने आगे कहा कि भारत में भी, शासक पूंजीपति वर्ग के द्वारा अपनायी जा रही नीतियों की बदौलत, खासकर उदारीकरण, भूमण्डलीकरण और निजीकरण के जरिये एक तरफ इने-गिने चंद एकाधिकारी पूंजीपति धन-दौलत के अम्बार लगा रहे हैं, दूसरी तरफ बहुसंख्यक मेहनतकश लोग गरीब से और गरीब, कंगाल और बदहाल होते जा रहे हैं। बेरोजगारी विकराल रूप लेती जा रही है। यह सब इसलिए आसानी हो रहा है कि वामपंथी ताकतों की एकजुटता नहीं हैं। मेहनतकश लोगों के महान शिक्षक, कॉमरेड लेनिन ने इस बारे में यह स्पष्ट मार्गदर्शन दिया था कि वामपंथी पार्टियों में चाहे आपस में कितने ही मतभेद हों, उनको लोगों के जायज मुद्दों को लेकर संयुक्त आन्दोलन छेड़ने के लिए सर्वसम्मति से न्यूनतम साझे कार्यक्रम और आचरण विधि के आधार पर एकजुट होना चाहिए। उन्होंने यह भी अपील की कि साझे दुश्मन के खिलाफ एकजुट होने के साथ-साथ वामपंथी ताकतों को अपने मतभेदों के विषयों को चर्चा-बहस के लिए सबके सामने रखकर साफ कर लेना चाहिए ताकि केवल मेहनतकश लोग ही नहीं, बल्कि वामपंथी पार्टी के कार्यकर्ता भी इससे सीख ले सकें और क्या सही है और क्या गलत इस बारे में जागरूक हो सकें। 'एकता-संघर्ष-एकता' के सिद्धांत और आचार संहिता के आधार पर वामपंथी पार्टियों के आपसी संबंध परिचालित होने चाहिएं। इस पद्धति के माध्यम से सही राजनीतिक लाइन उभर कर आयेगी और जीत होगी।

इसके बाद कॉमरेड राधाकृष्ण ने संक्षेप में यह वर्णन किया कि कुछ तुच्छ चुनावी स्वार्थ साधने के लिए सीपीआई (एम)-सीपीआई ने संघर्षशील वामपंथ का रास्ता छोड़ दिया है और या तो बीजेपी या कांग्रेस से हाथ मिला लिया है। कॉमरेड शिवदास घोष की शिक्षाओं का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि अगर कोई जायज जन आन्दोलन उभर कर आता है, तो एक सही क्रान्तिकारी ताकत को उसमें शामिल होना चाहिए और प्रतिक्रियावादी ताकतों को अलग-थलग करके उस आन्दोलन पर अपना नेतृत्व कायम करना चाहिए। इससे क्रान्तिकारी आन्दोलन को मजबूती मिलेगी। लेकिन सीपीआई (एम)-सीपीआई ने इस लेनिनीय शिक्षा का अनुसरण नहीं किया और 1970 के दशक में हुए जयप्रकाश (जेपी) आन्दोलन से सीपीएम-सीपीआई दूर रहीं और उस का नियंत्रण दक्षिणपंथी ताकतों को करने दिया। हालांकि, जब पश्चिम बंगाल में ऐसा एक जबरदस्त आन्दोलन खड़ा करने की वामपंथी ताकतों में चाह पैदा हुई, आंदोलन की आवश्यकता महसूस हुई, तब हमारी पार्टी ने यह पोजीशन ली थी कि चूंकि यह वामपंथ का गढ़ है, इसलिए यहां वामपंथी पार्टियों को ही मिल कर इस आन्दोलन का नेतृत्व करना चाहिए। यहां किसी बाहरी हस्ती की कोई जरूरत नहीं है। लेकिन हमारे सुझाव को नहीं मानते हुए सीपीआई (एम) एक कदम आगे बढ़ गई और उसने पश्चिम बंगाल के पूर्व कांग्रेसी मुख्यमंत्री प्रफुल्ल चंद्र सेन को आंदोलन का मार्गदर्शन और नेतृत्व करने का न्योता दे दिया। प्रफुल्ल सेन लोगों की नजरों में बहुत धिक्कारे हुए थे। मुख्यमंत्री रहते हुए, वे बड़े पैमाने पर गोलीबारी करके कई लोगों को मौत के घाट उतारने के जिम्मेदार थे। ऐसा व्यक्ति आंदोलन के नेता के रूप में बिल्कुल स्वीकार्य नहीं है। हमने इस पर सीपीआई (एम) की लाइन की सरेआम आलोचना की। हम चाहते थे कि यह महान लेनिन की शिक्षा के आधार पर इस महत्वपूर्ण मुद्दे पर खुली स्वस्थ चर्चा-बहस हो और सच्चाई सामने आए। लेकिन हमारी आलोचना पर एतराज करते हुए इसके जवाब में, सीपीआई (एम) ने कहा था कि संयुक्त आंदोलन की खुली आलोचना की इजाजत नहीं दी जा सकती। चूंकि उस समय संयुक्त आंदोलनों में उन्होंने हमारी पार्टी के साथ एकजुट नहीं होने का रास्ता चुन लिया था।

कॉमरेड राधाकृष्ण ने कहा कि उस गठबंधन से अपने को अलग करके आज हमारी पार्टी एसयूसीआई (सी) और कुछ अन्य पार्टियों का मानना है कि वाम-लोकतांत्रिक पार्टियों का यह फर्ज बनता है कि कांग्रेस व भाजपा दोनों की घोर एकाधिकार पूंजीपतिपरस्त, बहुराष्ट्रीय कंपनीपरस्त और जनविरोधी नीतियों के खिलाफ एकता कायम करनी चाहिए और संयुक्त आंदोलन गठित करना चाहिए। लेकिन किसी भी कीमत पर, संसदीय चुनावों में कुछ सीटें प्राप्त करने के लिए भाजपा के फासीवादी खतरे से लड़ने की आड़ में सीपीआई (एम)-सीपीआई इस समय कांग्रेस से सौदेबाजी करने में व्यस्त हैं। जबकि दरअसल भाजपा के खिलाफ वैचारिक संघर्ष निर्मित करने और भाजपा सरकार की जन-विरोधी नीतियों के खिलाफ संयुक्त आंदोलन गठित करने की उनकी कोई दिलचस्पी नहीं है। उनका एकमात्र उद्देश्य है चुनावी लाभ प्राप्त करना। कामरेड राधाकृष्ण ने यह उम्मीद जतायी कि एमसीपीआई (यू) की यह कांग्रेस संयुक्त वाम-जनवादी आन्दोलन गठित करने का कार्यक्रम लेगी।

लोकसभा चुनाव ...

(पृष्ठ 7 का शेष)

पार्टी, कांग्रेस और अन्य क्षेत्रीय दल पूंजीपतियों के चौकीदार के सिवा और कुछ नहीं हैं। मेहनतकश जनता की हित रक्षा से उनका कोई सरोकार नहीं है। अतः मेहनतकश वर्ग के हितों की रक्षा केवल क्रांतिकारी पक्ष के द्वारा ही संभव है। इसलिए चुनाव के दौरान भी क्रांतिकारी पक्ष के साथ खड़ा होना, उसे मजबूत करना और उसकी जीत सुनिश्चित करना एक महत्वपूर्ण फर्ज है। सरकार व राजसत्ता एक चीज नहीं है। सरकार बदलने से भी राजसत्ता वही की वही रहती है। राजसत्ता एक मशीन की तरह होती है। सरकार का काम होता है इस मशीन को चलाना, इसकी देखभाल करना। इसलिए राजसत्ता को केवल क्रांति के जरिये ही बदला जा सकता है और इसकी जगह नयी राजसत्ता कायम की जा सकती है। शोषण-उत्पीड़न पर आधारित इस पूंजीवादी शासन व्यवस्था को समाजवादी क्रांति के जरिये उखाड़ फेंककर मजदूर वर्ग की राजसत्ता स्थापित करने से ही मेहनतकश जनता की शोषण से मुक्ति संभव है।

अतः पूंजीवाद-विरोधी समाजवादी क्रान्ति के परिपूरक जोरदार जन आंदोलन खड़ा करना होगा। देशव्यापी जन-जागरण और जन-उभार संगठित करना होगा। जनजीवन की ज्वलंत मांगों को लेकर जन आंदोलन के दबाव से ही जिन्दा रहने के लिए जरूरी उन मांगों को हासिल करना होगा। लोगों के भविष्य के लिए काफी अहम इस लोकसभा चुनाव में जनता को तय करना है कि वह पूंजीवादी शोषण को चलते रहने देगी या फिर उससे मुक्ति के लिए संघर्ष को मजबूत करेगी। बेशक जनान्दोलन के एक अंग के रूप में, हम चुनाव में भाग लेंगे। जन आंदोलन की आवाज को बुलंद करने के लक्ष्य से ही चुनावी समर में उतरना होगा और आंदोलन के निरखे-परखे उम्मीदवारों को चुनावों में जितनी ज्यादा संख्या में संभव हो, उतनी ज्यादा संख्या में जिताकर लोकसभा व विधानसभाओं में भेजना होगा।

एसयूसीआई (सी) के उम्मीदवारों को विजयी बनायें

देश की इस अंधकारमय स्थिति में जब फासीवाद के बादल देश के राजनीतिक क्षितिज पर मंडरा रहे हैं, शोषित जनता के लिए आशा की एकमात्र किरण है एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) जो कॉमरेड शिवदास घोष की महान सीखों की रोशनी में अपने गठन के समय से ही पूंजीवाद-विरोधी समाजवादी क्रांति के लक्ष्य से देश भर में जनता की न्यायसंगत मांगों को लेकर जन आंदोलन गठित करने में लगी हुई है। एसयूसीआई (सी) ने जन आंदोलन की आवाज को जोरदार बनाने के लिए इस लोकसभा चुनाव में देश के 20 राज्यों व 3 केन्द्र शासित क्षेत्रों में 119 उम्मीदवार खड़े किये हैं। हम जनता से क्रांतिकारी पक्ष को मजबूती देने, वर्ग संघर्ष और जनआन्दोलन को तेज करने और मेहनतकश की सिद्धांत-निष्ठ राजनीति को आगे बढ़ाने के लिए अपना हर संभव योगदान, भरपूर समर्थन और वोट देकर एसयूसीआई (सी) के उम्मीदवारों को विजयी बनाने की पुरजोर अपील करते हैं।

देश भर में शहीदों को दी गई श्रद्धांजलि

Printed and published by Com. Satyawan on behalf of the Central Committee of the Socialist Unity Centre of India (Communist) and printed at M/s Balaji Offset Printers, 315/21, Shahzada Bagh, Daya Basti, Delhi and published at 3A/38, WEA, Satnagar, Karol Bagh, New Delhi-110005. Editor: Com. Satyawan, Member, Central Committee, SUCI(C)."
Email: sarvaharadrishtikon@gmail.com , sarvaharadrishtikon@yahoo.com फोन नं. : 011-25726631, 9868350503